কুমারেক



कुमारतन्त्र

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : फरवरी २०१५, संवत् २०७१

मूल्य : ३० रुपये मात्र

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

लङ्काधिपतिरावणकृत

कुमारतन्त्र

पं० रविदत्तराजवैद्यजीविरचित

भाषाटीकासहित

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

भूमिका ।

इस भरतखंडकी जैसी आयुर्वेदीयचिकित्सा उपयोगी है वैसी अन्यदेशीय नहीं. परंतु आजकल बहुतसे बालक अनेक रोगोंसे मरते सुने और देखे जाते हैं; बालकोंकी यथार्थ चिकित्सा नहीं होती. इस प्रकारका भयंकर शब्द देशदेशांतरसे आया हुआ सुनके निवारणार्थ बहुत प्रयत्नसे पुरातन "रावणकृत--कुमारतन्त्र" अर्थात् बाल-चिकित्सा ग्रंथ संस्कृतसे बेरीग्रामानिवासी रविदत्तशास्त्री राजवैद्यके द्वारा भाषाटीका रचना कराय स्वच्छतापूर्वक छापकर सज्जनोंके दृष्टिगोचर करते हैं। आशा है कि, सर्वजन बालकोंकी आरोग्यताके लिये इसकी एक २ प्रति अवश्य संग्रह करेंगे ।

आपका कृपाभिलाषी—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

" श्रीवेंकटेश्वर " यन्त्रालयाध्यक्ष—मुंबई.

श्रीवेङ्कटेशाय नमः ।

कुमारतन्त्रम् ।

भाषाटीकासमेतम् ।

प्रथमे दिवसे मासे वर्षे वा गृह्णाति नन्दना नाममातृका, तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः । अशुभं शब्दं मुञ्चति, आत्कारं च करोति, स्तन्यं न गृह्णाति । बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम् । नद्युभयतटमृत्तिकां गृहीत्वा पुत्तलिकां कृत्वा शुक्लौदनं शुक्लपुष्पं शुक्लाः सप्त ध्वजाः सप्त प्रदीपाः सप्त स्वस्तिकाः सप्त वटकाः सप्त शष्कुलिकाः सप्तजंबूफलानि सप्त मुष्टिकाः गन्धाः पुष्पं ताम्बूलं मत्स्यमांसं सुरा अग्र्यभक्तश्च पूर्वस्यां दिशि चतुष्पथे मध्याह्ने बलिर्देयः । ततोऽश्वत्थपत्रं कुम्भे प्रक्षिप्य शान्त्युदकेन स्नापयेत् । रसोनसिद्धार्थकमेषशृंगनिंबपत्रशिवनिर्माल्यैर्बालकं धूपयेत् । ॐ नमो नारायणाय अमुकस्य व्याधिं हन हन मुञ्च मुञ्च ह्रीं फट् स्वाहा ॥ एवं दिनत्रयं बलिं दत्त्वा चतुर्थदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत् । ततः संपद्यते शुभम् ॥ १ ॥

श्रीगणेशपदद्वन्द्वं प्रत्यूहव्यूहनाशनम् ।
नन्नमीमि नतिर्यस्य वितरत्युत्तमां मतिम् ॥ १ ॥

श्रीमद्गुरून्नमस्कृत्य रावणेन कृतस्य च ।
अस्य कुमारतंत्रस्य भाषाटीका विरच्यते ॥ २ ॥

अर्थ–प्रथम इस रावणकृत कुमारतंत्र अर्थात् बालकचिकित्सा-प्रकाशनामक ग्रंथका टीकाकार रविदत्तशास्त्री राजवैद्य, अनेक तरहके विघ्नोंके नाशपूर्वक शिष्यशिक्षाके लिये नमस्कारात्मक मङ्गल करते हैं; मैं अल्पमति टीकाकार विघ्नोंके समूहको नाशनेवाले श्रीयुत गणेशजीके दोनों चरणारविन्दोंको वारंवार प्रणाम करताहूं जिन्होंके चरणारविन्दों-को किया प्रणाम उत्तम बुद्धिको विस्तृत करता है ॥ १ ॥ और श्रीयुत गुरुजीको प्रणाम कर इस रावणकृत कुमारतंत्रकी भाषाटीका रचताहूं ॥२॥ यह मूल ग्रंथ रावणने बालकोंको सुख पहुँचानेके लिये संपूर्ण आयुर्वेदको विचार कर संस्कृतमें रचाथा वही है, इसको संपूर्ण मनुष्य अच्छीतरह जान बालकोंकी रक्षाके लिये चिकित्सा करें इस वास्ते इस ग्रंथकी भाषाटीका बनानेको रविदत्तशास्त्री उद्यत हुआ है॥२॥

अर्थ–प्रथम दिनमें प्रथम महीनेमें अथवा प्रथम वर्षमें नन्दना नाम मातृका करके गृहीत हुए बालकको प्रथम ज्वर हो; वह बालक अशुभ शब्दको कहै, आरकारको करै और चूंचीके दूधको ग्रहण नहीं करै उसकी बलि कहेंगे जिस करके शुभ प्राप्त हो । नदीके दोनों किना-रोंकी मिट्टी लेके पुत्तली बना, सफेद चावल, सफेद पुष्प सफेद सात-ध्वजा, सात दीपक, सात स्वस्तिक, सात बडे, सात पूरी, सात जामुन, सात मुष्टि अर्थात् मुठिये, चंदन, फूल, नागरपान, मछलीका मांस, मदिरा, सुन्दर चावल इन्हें ले पूर्वदिशामें चौराहा विषे मध्याह्नमें बलि देना; पीछे पीपलके पत्तोंको कलशमें डाल शान्तिजलसे स्नान करावे, पीछे लहसन, सरसों, बकरेका शींग, नींबके पत्ते, गंगाजल इन्होंसे बालकको धूपित करे । "ॐनमो नारायणाय अमुकस्य व्याधिं हन हन मुञ्च मुञ्च ह्रीं फट् स्वाहा" ऐसे इस मंत्रसे तीन दिन बलि देके चौथे दिन ब्राह्मणको भोजन करावे उससे शुभफल प्राप्त होताहै ॥१॥

द्वितीये दिवसे मासे वर्षे वा गृह्णातिः सुनन्दा नाम मातृका। तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः। चक्षुरुन्मीलयति गात्रमुद्वेजयाति न शेते क्रन्दति स्तन्यं न गृह्णाति आत्कारश्च भवाति। बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम् ॥ तन्दुलं हलपृष्ठैकं दधिगुडघृतैश्च मिश्रितं शरावैकं गन्धताम्बूलं पीतपुष्पं सप्तपीतध्वजाः सप्त प्रदीपाः दश स्वस्तिका मत्स्यमांस सुरातिलचूर्णानि पश्चिमायां दिशि चतुष्पथे बलिर्देयः दिनानि त्रीणि संध्यायाम्। ततः शान्त्युदकेन स्नापयेत् । शिवनिर्माल्यसिद्धार्थमार्जारलोमउशीरबालघृतैर्धूपं दद्यात् ॐ नमो नारायणाय अमुकस्य व्याधिं हन हन मुञ्च मुञ्च ह्रीं फट्ट स्वाहा ॥ चतुर्थ दिवसे ब्राह्मणं भोजयेत्।ततःसम्पद्यते शुभम् २॥

अर्थ—दूसरे दिनमें दूसरे महीनेमें अथवा दूसरे वर्षमें सुनन्दा नाम मातृकासे गृहीत हुये बालकको प्रथम ज्वर होता है वह बालक नेत्रोंको खोलताहै शरीरको कँपाताहै शयन नहीं करता है पुकारता है चूंचीके दूधको नहीं ग्रहण करता है आत्कार होता है, उसकी बलि कहते हैं जिस करके शुभ प्राप्त हो । चावल, एक हलका पृष्ठभाग, दही, गुड, घृत इन्होंसे युत किया एक सहनक, गंध, नागरपान, पीला फूल, पीली सातध्वजा, सात दीपक, दश स्वस्तिक, मछलीका मांस, मदिरा, तिलोंका चून इन्होंसे पश्चिम दिशामें चौराहा विषे तीन दिन सायंकालमें बलि देना, पीछे शांति जलसे स्नान करावे गंगाजल, सरसों, बिलावके रोम, खस, नेत्रवाला, घृत इन्हों करके धूप देवे "ॐ नमो नारायणाय अमुकस्य व्याधिं हन हन मुञ्च मुञ्च ह्रीं फट्ट स्वाहा"

इस प्रकार तीन दिन कर पीछे चौथे दिनमें ब्राह्मणको भोजन करावे पीछे शुभ फल प्राप्त होता है ॥ २ ॥

तृतीये दिवसे मासे वर्षे वा गृह्णाति पूतना नाम मातृका, तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः। गात्रमुद्वेजयति स्तन्यं न गृह्णाति मुष्टिं बध्नाति क्रन्दति उर्द्धं निरीक्षते। बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन संपद्यते शुभम्। नद्युभयतटमृत्तिकां गृहीत्वा पुत्तलिकां कृत्वा गन्धपुष्पतांबूलरक्तचन्दनरक्तपुष्पाणि सप्तरक्तध्वजाः सप्तदीपाः सप्तस्वस्तिकाः पक्षिमांसं सुरा अन्यभक्तश्च दक्षिणस्यां दिशि अपराह्णे चतुष्पथे बलिर्दातव्यः। शिवनिर्माल्यगुग्गुलुसर्षपनिम्बपत्रमेषशृङ्गैः दिनत्रयं धूपयेत्। ॐ नमो नारायणाय अमुकबालस्य व्याधिं हन हन मुञ्च मुञ्च हासय हासय स्वाहा। चतुर्थदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत् ततः सम्पद्यते शुभम् ॥ ३ ॥

अर्थ–तीसरे दिनमें तीसरे महीनेमें अथवा तीसरे वर्षमें पूतना नाम मातृका बालकको ग्रहण करती है उसके ग्रहण करनेसे प्रथम बालकको ज्वर होता है शरीरको कँपाताहै चूंचीका ग्रहण नहीं करता है मुष्टिको बांधता है पुकारता है ऊपरको देखता है उसकी बलि कहते हैं जिस करके शुभ प्राप्त हो। नदीके दोनों किनारोंकी मिट्टी लेके पुत्तली बना चंदन, फूल, नागरपान, लालचंदन, लालफूल, सात लालध्वजा, सातदीपक, सात स्वस्तिक, पक्षियोंका मांस मदिरा, छूताभात इन्होंसे दक्षिण दिशामें अपराह्न अर्थात् १८ घडी दिन चढे तब चौराहेमें बलि देना। गंगाजल, गुग्गल, सरसों नींबके पत्ते, बकरेका शींग इन्होंसे तीन दिन धूप देवे। ॐ नमो

नारायणाय बालस्य व्याधिं हन हन मुञ्च मुञ्च ह्रासय ह्रासय स्वाहा । इस प्रकार तीन दिन करे पीछे चौथे दिन ब्राह्मणको भोजन करावे पीछे शुभ प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थे दिवसे मासे वर्षे वा गृह्णाति मुखमुण्डिका नाम मातृका; तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः। ग्रीवां नामयति अक्षिणी उन्मीलयति स्तन्यं न गृह्णाति रोदिति स्वपिति मुष्टिं बध्नाति । बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम् । नद्युभयतटमृत्तिकां गृहीत्वा पुत्तलिकां कृत्वा उत्पलपुष्पं गन्धताम्बूलं दश ध्वजाः चत्वारः प्रदीपाः त्रयोदश स्वस्तिकाः मत्स्यमांसं सुरा अग्र्यभक्तश्च उत्तरस्यां दिशि अपराह्णे चतुष्पथे बलिं दद्यात् । आद्यमासिको धूपः । ॐ नमो नारायणाय हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा । चतुर्थदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत् । ततः सम्पद्यते शुभम् ॥ ४ ॥

अर्थ--चतुर्थ दिनमें चौथे महीनेमें अथवा चौथे वर्षमें मुखमुण्डिका नाम मातृका बालकको ग्रहण करती है उसके ग्रहण करनेसे प्रथम बालकको ज्वर होता है ग्रींवाको अर्थात् नाडको निवाताहै नेत्रोंको खोलता है चूंचीको ग्रहण नहीं करता है रोता है सोता है मुष्टिको बांधता है उसकी बलिको कहेंगे जिस करके शुभ प्राप्त हो । नदीके दोनों किनारोंकी मिट्टी लेके पुत्तली बना सुफेद कमलका फूल, चन्दन, नागरपान, दशध्वजा, चार दीपक, तेरह स्वास्तिक, मछलीका मांस, मदिरा, छूता भोजन इन्होंसे उत्तर दिशामें अपराह्ण अर्थात् १८ घडी दिन चढे पीछे चौराहेमें बलि देना । पहिले महीनेमें जो धूप कहा है अर्थात् लहसन, सरसों, बकरेका शींग, नींबके पत्ते और

गंगाजल इन्होंसे धूप देना, " ॐनमो नारायणाय हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा " इस प्रकार तीन दिन कर पीछे चौथे दिनमें ब्राह्मणको भोजन करावे तिससे शुभ प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

पञ्चमे दिवसे मासे वर्षे वा गृह्णाति कटपूतना नाम मातृका; तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः । गात्रमुद्वेजयति स्तन्यं न गृह्णाति मुष्टिं च बध्नाति बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम् । कुम्भकार-चक्रस्य मृत्तिकां गृहीत्वा पुत्तलिकां निर्माय गन्ध-ताम्बूलं शुक्लौदनःशुक्लपुष्पं पञ्च ध्वजाः पञ्च प्रदीपाः पञ्च वटकाः ऐशान्यां दिशि बलिर्दातव्यः । शान्त्यु-दकेन स्नापयेत् । शिवनिर्माल्यसर्प-निर्मोक-गुग्गुलु-निम्बपत्रबालकघृतैर्धूपं दद्यात् । ॐ नमो नारायणाय अमुकस्य व्याधिं चूर्णय चूर्णय हन हन स्वाहा । चतुर्थे दिवसे ब्राह्मणं भोजयेत् । ततः सम्पद्यते शुभम् ॥५॥

अर्थ-पांचवें दिनमें पांचवें महीनेमें अथवा पांचवें वर्षमें कटपूतना नाममातृका बालकको ग्रहण करती है उसके ग्रहण करनेसे प्रथम बाककके ज्वर होताहै शरीरको कँपाता है चूंचीके दूधको नहीं ग्रहण करताहै मुष्टिको बांधता है उसकी बलि कहते हैं जिससे शुभ हो । कुम्हारके चाककी मिट्टीको ले पुत्तली बना चन्दन, नागरपान, सुपेद चावल, सुफेद फूल, पांच ध्वजा, पांच दीपक, पांच बडे इन्होंसे ऐशानी दिशामें बलि देना, शांति जलसे स्नान करावे; गंगाजल सांपकी कांचली, गूगल, नींबके पत्ते, नेत्रवाला घृत इन्हों करके धूपको देवे " ॐ नमो नारायणाय अमुकस्य व्याधिं चूर्णय २ हन हन स्वाहा" इस प्रकार तीन दिन कर पीछे चौथे दिनमें ब्राह्मणको भोजन करावे तिसके अनंतर शुभ होताहै ॥ ५ ॥

षष्ठे दिवसे मासे वर्षे वा गृह्णाति शकुनिका नाम मातृका; तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः । गात्रभेदं च दर्शयति दिवा रात्रावुत्थानं भवति ऊर्ध्वं निरीक्षते । बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम् । पिष्टकेन पुत्तलिकां कृत्वा शुक्लपुष्पं रक्तपुष्पं पीतपुष्पं गन्धताम्बूलं दशप्रदीपाः दशध्वजाः दश स्वस्तिकाः दश मुष्टिकाः दश वटकाः क्षीरजम्बुडिकामत्स्यमांसं सुरा आग्नेय्यां दिशि निष्क्रान्ते मध्याह्ने बलिं दापयेत् । शान्त्युदकेन स्नापयेत् । शिवनिर्माल्यरसोनगुग्गुलुसर्पनिर्मोकनिम्बपत्रघृतैर्धूपं दद्यात् । ॐ नमो नारायणाय चूर्णय चूर्णय हन हन स्वाहा । चतुर्थदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत् । ततः सम्पद्यते शुभम् ॥ ६ ॥

अर्थ--छठे दिनमे छठे महीनेमें अथवा छठे वर्षमें शकुनिकानाम मातृका बालकको ग्रहण करती है उसके' ग्रहण करनेसे प्रथम ज्वर होताहै शरीरके विदारणको दिखाता है दिन रात उठा रहता है ऊपरको देखताहै उसकी बलि कहतेहैं जिसकरके शुभ प्राप्त हो । पीठीकी पूतली बना सुफेदपुष्प, रक्तपुष्प, पीलापुष्प, चंदन, नागरपान, दश दीपक, दशध्वजा, दशस्वास्तिक, दशमुष्टिक अर्थात मुठिये, दश बडे दूध, जंबूडिका मछलीका मांस, मदिरा इन्हेंासे आग्नेदिशामें मध्याह्न निकसे पीछे बलि देवे शांतिजलसे स्नान करवावे । गंगाजल, लहसन गूगल, सांपकी कांचली, नींबके पत्ते, घृत इन्होंसे धूप देवे, " ॐ नमो नारायणाय चूर्णय चूर्णय हन हन स्वाहा " इस प्रकार तीन दिन कर चौथे दिनमें ब्राह्मणको भोजन करावे तिससे शुभ उपजताहै॥ ६॥

सप्तमे दिवसे मासे वर्षे वा यदा गृह्णाति शुष्करेवती

नाम मातृका; तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः। गात्रमुद्वेजयति मुष्टिं बध्नाति रोदिति । बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम् । रक्तपुष्पं शुक्लपुष्पं गन्धताम्बूलं रक्तौदनः कृशरास्त्रयोदश स्वस्तिकाः मत्स्यमांसं सुरा त्रयोदशध्वजाः पञ्च प्रदीपाः पश्चिम-दिग्भागे ग्रामसकाशे अपराह्णे वृक्षमाश्रित्य बलिं दद्यात् शान्त्युदकेन स्नानम् । गुग्गुलुमेषशृङ्गीसर्ष-पोशीरबालकघृतैर्धूपयेत् । ॐ नमो नारायणाय दीप्ततेजसे हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा । चतुर्थदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत् । ततः सम्पद्यते शुभम् ॥ ७ ॥

अर्थ--सातवें दिनमें सातवें महीनेमें अथवा सातवें वर्षमें शुष्करेवती नाम मातृका बालकको ग्रहण करती है उसके ग्रहण मात्रकरके प्रथम ज्वर होताहै शरीरको कँपाता है मुष्टिको बांधता है रोता है उसकी बलि कहते हैं जिस करके शुभ प्राप्त होता है । लाल फूल, सफेदफूल, चंदन, नागरपान, लालचावल कसार, अथवा खीचडी तेरह स्वस्तिक, मछलीका मांस, मदिरा, तेरह ध्वजा, पांच दीपक इन्हेंासे पश्चिमादिशामें ग्रामसे निकसके दुपहर पीछे वृक्षके आश्रितहो बलि देवे शांतिजलसे स्नान करावे और गुग्गुल, मेंढाका शींग, सरसों, खस, नेत्रबाला, घृत इन्हों करके धूप देवे । " ॐ नमो नारायणाय दीप्ततेजसे हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा " इस प्रकार तीन दिन कर पीछे चौथे दिनमें ब्राह्मणको भोजन करवावे तिससे शुभ प्राप्त होताहै ॥७॥

अष्टमे दिवसे मासे वर्षे वा यदि गृह्णाति अर्य्यका नाम मातृका, तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः । गृध्रगन्धः पूतिगन्धश्च जायते आहारं च न गृह्णाति

उद्वेजयति गात्राणि । वलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम् । रक्तपीतध्वजाः चन्दनं पुष्पं शष्कुल्यः पर्प्पटिकाः मत्स्यमांसं सुरा जम्बूडिकाः प्रत्यूषे बलिर्देयःग्रामान्तरे। मंत्रः ॐ नमो नारायणाय चतुर्दिशमोक्षणाय व्याधिं हन हन मुञ्च मुञ्च दह दह ॐ ह्रीं फट् स्वाहा । चतुर्थदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत् । ततः सम्पद्यते शुभम् ॥ ८ ॥

अर्थ–आठवें दिनमें आठवें महीनेमें और आठवें वर्षमें अर्यका नाम मातृका बालकको ग्रहण करती है उसके ग्रहण करनेसे प्रथम ज्वर होता है गीधकासा गंध और दुर्गंध उपजता है और भोजनको नहीं ग्रहण करता है अंगोंको कँपाता है उसकी वलि कहते हैं, जिस करके शुभ उपजता है। लाल और पीलीध्वजा, चन्दन, फूल, पूरी, पापडी, मछलीका मांस, मदिरा, जंबूडिका इन्होंसे प्रभातमें ग्रामके भीतर वलि देना। मंत्र यह है "ॐ नमोनारायणाय चतुर्दिशमोक्षणाय व्याधिं हन हन मुञ्च मुञ्च दह दह ॐ ह्रीं फट् स्वाहा" इस प्रकार तीन दिन कर पीछे चौथे दिनमें ब्राह्मणको भोजन करवावे तिससे शुभ उत्पन्न होता है ॥ ८ ॥

नवमे दिवसे मासे वर्षे वा गृह्णाति भूसूतिका नाम मातृका, तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः नित्यं छर्दिर्भवति गात्रभेदं दर्शयति मुष्टिं बध्नाति वलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम् । नद्युभयतटमृत्तिकां गृहीत्वा पुत्तलिकां निर्माय शुक्लवस्त्रेण वेष्टयेत् । शुक्लपुष्पं गन्धं ताम्बूलं शुक्लत्रयोदशध्वजाः त्रयोदशदीपाः त्रयोदशस्वस्तिकाः त्रयोदशपुत्त-

लिकाः त्रयोदशमत्स्यपुत्तलिकाः मत्स्यमांससुराः उत्तरदिग्भागे ग्रामान्निष्क्रम्य बलिंदद्यात् शांत्युदकेन स्नानं गुग्गुलुनिम्बपत्रगोशृंगश्वेतसर्षपघृतैर्धूपं दद्यात् । मंत्रः । ॐ नमो नारायणाय चतुर्भुजाय हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा । चतुर्थेदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत् । ततः सम्पद्यते शुभम् ॥ ९ ॥

अर्थ–नववें दिनमें नववें महीनेमें अथवा नववें वर्षमें भूसूतिका-नाम मातृका बालकको ग्रहण करती है उसके ग्रहण करनेसे प्रथम ज्वर होवे नित्य छर्दि होती है बालक अंगके विदारणको दिखाताहै मुष्टिको बांधता है उसकी बलि कहते हैं, जिस करके शुभ उपजता है । नदीके दोनों किनारोंकी मिट्टी लेके पुत्तली बना सफेद वस्त्रसे लपेट सफेद फूल, चन्दन, नागरपान, तेरह सफेदध्वजा, तेरह दीपक, तेरह स्वस्तिक, तेरह पुत्तली, तेरह मछलीकी पुत्तली, मछलीका मांस, मदिरा इन्होंसे उत्तरदिशामें ग्रामसे निकसके बलि देनी शांति जलसे स्नान कराना गूगल,. नींबके पत्ते, गौका शींग, सफेद सरसों, घृत इन्होंसे धूप देवे, मंत्र यह है, " ॐ नमो नारायणाय चतुर्भुजाय हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा " । इस प्रकार तीन दिन कर पीछे चौथे दिनमें ब्राह्मणको भोजन करवावे तिससे शुभ उत्पन्न होता है ॥ ९ ॥

दशमे दिवसे मासे वर्षे वा गृह्णाति निर्ऋता नाम मातृका; तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः । गात्रमुद्वेजयति आत्कारं करोति रोदिति मूत्रं पुरीषं च भवति । बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम् । पारावारमृत्तिकां गृहीत्वा पुत्तलिकां निर्माय गन्धं ताम्बूलं रक्तपुष्पं रक्तचन्दनं पञ्चवर्णध्वजाः

पञ्चप्रदीपाः पञ्चस्वास्तिकाः पञ्चपुत्तलिकाः मत्स्य-मांसं सुरा वायव्यां दिशि बलिं दद्यात् । काक-विष्ठागोमांसगोशृङ्गरसोनमार्जारलोमनिम्बपत्रघृतैर्धूप-येत् । ॐ नमोनारायणाय चूर्णितहस्ताय मुञ्च मुञ्च स्वाहा । चतुर्थदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत् ततः सुस्थो भवति बालकः ॥ १० ॥

अर्थ—दशवें दिनमें दशवें महीनेमें अथवा दशवें वर्षमें निर्ऋता नाम मातृका बालकको ग्रहण करती है उसके ग्रहण करनेसे प्रथम ज्वर होता है; शरीरको कँपाता है, आत्कारको करता है, रोता है मूत्र और विष्ठा विकार होता है उसकी बलि कहते हैं जिस करके शुभ हो। समुद्रकी मिट्टी लेके पुत्तली बनावे, चंदन, नागरपान, लालफूल, लाल चंदन, पांचवर्णोवाली ध्वजा, पांच दीपक, पांच स्वस्तिक, पांच पुत्तली, मछलीका मांस, मदिरा इन्होंसे वायव्य दिशामें बलि देना, काककी विष्ठा, गौका मांस, गौका शींग, लहसन, बिलावके रोम, नींबके पत्ते, घृत इन्होंसे धूप देवे "ॐ नमो नारायणाय चूर्णितहस्ताय मुञ्च मुञ्च स्वाहा" इस प्रकार तीन दिन कर चौथे दिनमें ब्राह्मणको भोजन करवावे तिससे सुस्थ बालक होता है ॥ १० ॥

एकादशे दिवसे मासे वर्षे वा यदि गृह्णाति पिलिपि-च्छिका नाम मातृका; तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः । आहारं न गृह्णाति । ऊर्ध्वदृष्टिर्भवति । गात्रभंगो भवति ॥ बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन संप-द्यते शुभम् । पिष्टकेन पुत्तलिकां कृत्वा रक्तचन्दनं रक्तं च तस्या मुखं दुग्धेन सिञ्चेत् । पीतपुष्पं गन्ध-तांबूलं सप्तपीतध्वजाः सप्तप्रदीपाः अष्टौ वटकाः अष्टौ शष्कुलिकाः अष्टौ पूरिकाः मत्स्यमांसं सुरा

पूर्वस्यां दिशि बलिर्दातव्यः शांत्युदकेन स्थानम् । शिवनिर्माल्यगुग्गुलुगोशृङ्गसर्पनिर्मोकघृतैर्धूपयेत् । ॐ नमो नारायणाय मुञ्च मुञ्च स्वाहा । चतुर्थदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत् ततः सुस्थो भवति बालकः ॥ ११ ॥

अर्थ–ग्यारहवें दिनमें ग्यारहवें महीनेमें अथवा ग्यारहवें वर्षमें पिलिपिच्छिका नाम मातृका बालकको ग्रहण करती है। उसके ग्रहण मात्रसे प्रथम ज्वर होता है, भोजनको नहीं ग्रहण करता है, ऊपरको दृष्टि होती है, अंगभंग होता है, उसकी बलि कहते हैं, जिसकरके शुभ होता है पीठीसे पुत्तली बना लालचंदनसे पुत्तलीके मुखको लाल बना दूधसे मुखको सींचे । पीला फूल, चंदन, नागरपान, सात पीली ध्वजा, सात दीपक, आठ बडे, आठ पूरी, आठ कचौरी, मछलीका मांस, मदिरा इन्होंसे पूर्व दिशामें बलि देना, शांतिजलसे स्नान और गंगाजल, गूगल, गौका शींग, सांपकी कांचली, घृत इन्होंसे धूप देना "ॐ नमो नारायणाय मुञ्च मुञ्च स्वाहा" इस प्रकार तीन दिन कर चौथे दिन ब्राह्मणको भोजन करवावे तिससे बालक सुस्थ होता है॥ ११॥

द्वादशे दिवसे मासे वर्षे वा यदि गृह्णाति कामुका नाम मातृका; तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः । विहस्य वादयति करेण तर्जयति गृह्णाति क्रामति निःश्वसिति मुहुर्मुहुराहारं न करोति । बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम् । क्षीरेण पुत्तलिकां कृत्वा गन्धताम्बूलं शुक्लपुष्पं शुक्लसप्तध्वजाः । सप्त प्रदीपाः सप्त आपूपिकाः करस्थेन दधिभक्तेन सर्वं कर्म बलिं दद्यात् शांत्युदकेन स्नापयेत् । शिवनि-र्माल्य-गुग्गुलु-सर्षपघृतैर्धूपयेत् " ॐ नमो नाराय-

णाय मुञ्च मुञ्च हन हन स्वाहा" । चतुर्थदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत् ततः सुस्थो भवति बालकः॥१२॥

अर्थ–बारहवें दिन बारहवें महीनेमें अथवा बारहवें वर्षमें कामुका नाम मातृका बालकको ग्रहण करती है उसके ग्रहण मात्रसे प्रथम ज्वर होता है बहुत हँसके बादताहै हाथसे झिडकताहै ग्रहण करता हैं पुकारता है वारंवार सुसकता है भोजन नहीं करता है । उसकी बलि कहते हैं–जिस करके शुभ हो । दूधसे पुत्तली बना चंदन, नागरपान, सुपेद फूल, सुपेद सात ध्वजा, सात दीपक, सात पूडी, हाथमें स्थित किये दही भातसे सब कर्म बलिको देवे; शांतिजलसे स्नान करावे, गंगाजल, गूगल, सरसों, घृत इन्होंसे धूप देवे "ॐ नमो नारायणाय मुञ्च मुञ्च हन हन स्वाहा" इस प्रकार तीन दिन कर चौथे दिनमें ब्राह्मणको भोजन करावे तिससे बालक सुस्थ अर्थात् आनंदित होता है ॥ १२ ॥

धात्र्यास्तु गुरुभिर्भोज्यैर्विषमैर्दोषलैरपि । दोषा देहे प्रकुप्यन्ति ततः स्तन्यं प्रदुष्यति ॥ १३ ॥ मिथ्याहारविहारिण्या दुष्टा वातादयः स्त्रियाः ॥ दूषयन्ति प्रयत्नेन जायन्ते व्याधयः शिशोः ॥ १४ ॥

अर्थ–बहुत भारी अन्नोंको भोजन करना और समय बिताकर अथवा विना समय भोजन करना और दोषोंको उपजानेवाला भोजन करना इन्हों करके माताके अथवा धाय माताके शरीरमें वात आदि दोष कुपित होते हैं इसलिये दूध बिगड जाता है ॥ १३ ॥ बिगडा सडा, बासी–बहुत जला तथा कच्चा इन आदि भोजन और जहांकी आबहवा बिगडी हुई हो ऐसी जगहमें रहना तथा अनेक तरहके अयोग्य काम करना इन आदिको सेवनेवाली बालकको दूध पिलानेवाली माताके वात आदि दोष बहुत बिगड जाते हैं और तिस करके बालकके बहुत प्रकारके रोग उपजते हैं ॥ १४ ॥

दन्तोद्भवश्च रोगाणां सर्वेषामेव कारणम् ॥ विशेषा-ज्ज्वरविड्भेदकाश्यंच्छर्दिशिरोरुजाम् ॥ अभिष्य-न्दश्च शोथश्च विसर्पश्च प्रजायते ॥ १५ ॥

अर्थ-बालकके दंतोंका ऊगना सब रोगोंका कारण है अर्थात् जब बालकके दांत ऊगने लगते हैं तब कोईसा रोगका होजाना आश्चर्य नहीं परंतु विशेषकरके ज्वर, फटाहुआ मलका दस्त, शरीरका माडापन, छर्दि, शिरमें शूल अथवा चक्कर, आँखोंसे पानी आदिका निकसना, शरीरपर सोजा और संपूर्ण शरीरपर फैली हुई छोटी छोटी फुन्सियोंका होना ये रोग तो अवश्यही होजाते हैं ॥ १५ ॥

वातदुष्टं शिशुः स्तन्यं पिबन् वातगदातुरः ॥ क्षाम-स्वरः कृशांगश्च बद्धविण्मूत्रमारुतः ॥ १६ ॥ स्विन्नो भिन्नमलो बालः कामलापित्तरोगवान् ॥ तृष्णालु-रुष्णसर्वांगः पित्तदुष्टं पयः पिबन् ॥ १७॥ कफदुष्टं पिबन् क्षीरं लालालुः श्लेष्मरोगवान् ॥ निद्रार्दितो जडः शूनः शुक्लाक्षश्छर्दनः शिशुः ॥ १८ ॥

अर्थ-वातसे दूषित हुआ दूधको पीनेवाला बालक वातके रोगोंसे पीडित होके मन्दस्वरवाला, माडाशरीरवाला और मल, मूत्र अधोवात इन्होंका बँधाववाला ऐसा होजाता है ॥ १६ ॥ पित्तसे दूषित हुए दूधको पीनेवाला बालक पसीनावाला, फटा हुआ मलका दस्तवाला, कामला और पित्तके रोगोंसे पीडित हुआ तृषावाला, गर्मरूप सब अङ्गोंवाला ऐसा हो जाता है ॥ १७ ॥ कफसे दूषित हुए दूधको पीनेवाले बालकके लार पडती है कफके रोगोंसे पीडित रहता है नींदसे पीडित रहता है जड रहता है शरीरपर सोजासे युक्त रहता है सुपेद आंखोंवाला होजाता है और छर्दि करता है ऐसा बालक होजाता है ॥ १८ ॥

सर्वं निवार्यते बाले स्तन्यं नैव निवार्यते ॥ मात्रया लंघयेद्धात्रीं शिशोरेतद्धि लंघनम् ॥ १९ ॥ विडंगफलमात्रं तु जातमात्रस्य भेषजम् ॥ अनेनैव प्रमाणेन मासि मासि प्रवर्द्धयेत् ॥ २० ॥

अर्थ-बालक सब चीजोंको वर्जित करे परन्तु दूधको वर्जित नहीं करे बालककी दूध पिलानेवाली माताको अल्प भोजन खानेको देवे बालकका यही लंघन है ॥ १९ ॥ जन्म हुए दिनसे लेके पहिले महीने पर्यंत बालकको वायविडंगके दानेके परिमाण औषध देना इसीही प्रमाण करके महीने महीनेमें एक एक वायविडंगके दानेके समान बढाता जावे अर्थात् पहले महीनेमें वायविडंगके एक दानेके समान और दूसरे महीनेमें दो दानोंके समान और तीसरे महीनेमें तीन दानोंके समान ऐसे औषध देवे ॥ २० ॥

प्रथमे मासि बालस्य देया भेषजरक्तिका ॥ अवलेह्या तु कर्तव्या मधुक्षीरसिताघृतैः ॥ २१ ॥ एकैकां वर्द्धयेत्तावद्यावत् संवत्सरो भवेत् ॥ तदूर्ध्वं माषवृद्धिः स्याद्यावत् षोडश वत्सराः ॥ २२ ॥

अर्थ-पहले महीनेमें बालकको १ रत्तीभर औषधी देनी और शहद दूध, मिश्री इन्होंसे चटनी बना देनी ॥ २१ ॥ महीना महीना गैल एक एक २ रत्ती भरके बढावे प्रथम वर्ष पर्यंत वर्षसे उपरांत वर्ष वर्ष गैल एक मासाभर बढावे सोलह वर्ष पर्यंत बढाता रहे यह दूसरा मत है । सिद्धांत यह है कि उत्तम वैद्यकी संमतिके अनुसार बलवाली औषधको महीना महीना गैल वायविडंगके दानेके समान बढावे और अल्पबलवाली औषधको महीना महीना गैलं एक एक रत्ती बढाता जावे ॥ २२ ॥

ततः स्थिरा भवेत्तावद्यावद्व वर्षाणि सप्ततिः ॥ ततो बालकवन्मात्रा ह्रासनीया शनैः शनैः॥ २३ ॥ चूर्ण-

कल्कावलेहानामियं मात्रा प्रकीर्त्तिता ॥ कषायस्य पुनः सैव विज्ञातव्या चतुर्गुणा ॥ २४ ॥

अर्थ-सत्रहवें वर्षसे लेके सत्तर ७० वर्ष पर्यंत समान तौलवाली औषधी देनी पीछे इकहत्तर ७१ वर्षसे लेके बालककी तरह हौले हौले औषधिकी मात्रा घटादेनी अर्थात् बहत्तरवें वर्षसे लेके बयासी ८२ वर्षतक वर्ष वर्ष गैल एक एक रत्ती औषधी घटानी पीछे त्र्यासी ८३ वर्षसे लेके ९८ अट्ठानवें वर्ष पर्यंत प्रति वर्ष एक एक मासा औषधी घटा देनी ॥ २३ ॥ चूर्ण कल्क और चटनी इन्होंकी यह मात्रा कही है और काढेकी तो फिर वही चौगुनी मात्रा जाननी उचित है ॥ २४ ॥

कुकूणकः क्षीरदोषाच्छिशूनामेव वर्त्मनि ॥ जायते तेन नेत्रं च कंडूरं च स्रवेन्मुहुः ॥२५॥ शिशुः कुर्याल्ललाटाक्षिकूटनासाविघर्षणम् ॥ शक्तो नार्कप्रभां द्रष्टुं न नेत्रोन्मीलनक्षमः ॥२६॥ फलत्रिकं लोध्रपुनर्नवे च सशृंगवेरं बृहतीद्वयं च ॥ आलेपनं श्लेष्महरं सुखोष्णं कुकूणके कार्यमुदाहरन्ति ॥ २७ ॥

अर्थ-दूधके दोषसे बालकोंके वर्त्ममें कुकूणकरोग उपजता है उस करके आँखोंमे बहुत खाज होती है ॥ २५ ॥ और बालक माथा आंखके डोले नासिका इन्होंको खौरता है और सूर्यका तेज देखनेको समर्थ नहीं रहता है और आँखोंको नहीं खोल सकता है ॥२६॥ हरडे, बहेडा, आंवला, लोध, सांठी, अदरख, दोनों कटेली इन्होंको पानीमें पीस और सुखपूर्वक गरम कर किया लेप कुकूणक रोगको दूर करता है ॥ २७ ॥

मातुः कुमारो गर्भिण्याः स्तनं प्रायः पिबन्नपि ॥ कासाग्निसादवमथुतंद्राकार्श्यारुचिभ्रमैः ॥२८॥ युज्यते

कोष्ठवृद्ध्या च तमाहुः पारिगर्भिकम् ॥ रोगं परिभवाख्यं च दद्यात्तत्राग्निदीपनम् ॥ २९ ॥

अर्थ–गर्भवाली माताकी चूंचियोंको विशेष करके पीनेवाले बालकके खांसी, मंदाग्नि रोग, छर्दि, तंद्रारोग, शरीरका माडापन, अरुची, भ्रम ॥ २८ ॥ और कोष्ठवृद्धि अर्थात् कोठेका बढाना ये उपजते हैं उसको वैद्यजन पारिगर्भिक रोग अथवा परिभवाख्य रोग कहते हैं उस रोगमें पेटके अग्निको दीपन अर्थात् जगानेवाले औषध देने हित हैं ॥ २९ ॥

तालुमांसे कफः क्रुद्धः कुरुते तालुकंटकम् ॥ तेन तालुप्रदेशस्य निम्नता मूर्ध्नि जायते ॥ ३० ॥ तालुपाते स्तनद्वेषः कृच्छ्रात्पानं शकृद्द्रवम् ॥ तृडक्षिकण्ठास्यरुजा ग्रीवादुर्धरता वमिः ॥३१॥ हरीतकी वचा कुष्ठकल्कं माक्षिकसंयुतम् ॥ पीत्वा कुमारः स्तन्येन मुच्यते तालुकण्टकात् ॥ ३२ ॥

अर्थ–तालुवेके मांसमें क्रोधको प्राप्त हुआ कफ तालुकण्टक रोगको करता है उस करके शिरमें तालुप्रदेश डूंघा होजाता है ॥ ३० ॥ तालुपातमें बालक चूंचियोंको नहीं पीता है जो पीता है तो कष्टसे पीता है । पतला दस्त जाता है और तृषा, आंखरोग, कण्ठरोग, मुखरोग, नाडको धारण करनेमें दुःख और छर्दि ये रोग उपजते हैं ॥ ३१ ॥ हरडे, वच, कूट इन्होंका कल्क बना शहदमें मिला बालक पीवे तो तालुकण्टक रोगसे छूटता है ॥ ३२ ॥

विसर्पस्तु शिशोः प्राणनाशनो बस्तिशीर्षजः ॥ पद्मवर्णो महापद्मो रोगो दोषत्रयोद्भवः ॥ शंखाद्वा हृदयं याति हृदयाद्वा गुदं व्रजेत् ॥३३॥ मृतसूता-

भ्रवंगं च रौप्यं योज्यं च तत्समम् ॥ मृतताम्रस्य तीक्ष्णस्य प्रत्येकं च द्विभागिकम् ॥ ३४ ॥ व्योषं बिभीतकं चैव कासीसं मृतमेव च ॥ नागवल्लीदलर-सैर्भावयेच्च पुनः पुनः ॥ ३५ ॥ वल्लीप्रमाणं दातव्यः सर्वरोगहरः परः ॥ गर्भिणीबालकानां च सर्वज्वर-विनाशनः ॥ ३६ ॥

अर्थ-बालकके बस्तिस्थानके शिरपर बहुतसी फुन्सियां होके फैलती और कमलके समान वर्णवाला यह महापद्म रोग तीन दोषोंसे उपजता है अथवा कनपटियोंसे हृदयपर आता है अथवा हृदयसे गुदाको प्राप्त होता है, यह रोग प्राणोंको नाशता है ॥ ३३ ॥ पारेकी भस्म, अभ्रक भस्म, रांगकी भस्म, चांदीकी भस्म ये चारों बराबर भाग ले तांबेकी भस्म और पोलाद लोहेकी भस्म दो दो भाग ले ॥ ३४ ॥ सोंठ, मिरच, पीपल, बहेडा, हीराकसीसकी भस्म इन सबको नागरपानोंके रसमें बारंवार भावना देके ॥ ३५ ॥ आधी रत्तीभर यह औषध देवे तो सब रोगोंको हरता है, उत्तम है, गर्भिणी स्त्री और बालकोंके सब ज्वरोंको नाशता है ॥ ३६ ॥

वचा कुष्ठं तथा ब्राह्मी सिद्धार्थकमथोपि च ॥ सारिवा सैंधवं चैव पिप्पली घृतमष्टमम् ॥ ३७ ॥ सिद्धं घृत-मिदं मेध्यं पिबेत्प्रातर्दिने दिने ॥ दृढा स्मृतिः क्षिप्र-मेधा कुमारो बुद्धिमान् भवेत् ॥ ३८ ॥ न पिशाचा न रक्षांसि न भूता न च मातरः ॥ प्रभवंति कुमा-राणां पिबतामष्टमंगलम् ॥ ३९ ॥

अर्थ-वच, कूठ, ब्राह्मी, सरसों, सारिवा, अनंतमूल, सेंधानमक, पीपल और आठवां घृत इन सबको मिला घृत सिद्ध करना ॥३७॥

इस सिद्ध हुये घृतको प्रभातमें नित्य पीवे, इस करके दृढरूप स्मृति होती है शीघ्र ग्रहण करनेवाली बुद्धि उपजती है और बालक बुद्धिमान् होजाता है ॥ ३८ ॥ इस अष्टमङ्गलनामक घृतके पीनेवाले बालकोंको पिशाच राक्षस भूत मातृगण ये पीडा नहीं देते हैं ॥३९॥

यष्टीमधुतुगाक्षीरीलाजांजनसिताकृतः ॥ लेहः प्रदत्तो बालानामशेषज्वरनाशनः ॥४० ॥ क्वाथः स्थिरागोक्षुरविश्ववालक्षुद्रादयाछिन्नरुहाकिरातैः॥ वातज्वरं वा शमयेत्प्रपीतो बालेन धात्र्या च कृशानुकारी॥४१॥ पञ्चमूलीकृतः क्वाथः पीतो वातज्वरापहः॥तद्वच्छिन्नरुहाद्राक्षागोपकन्यावलाभवः ॥ ४२ ॥

अर्थ–मुलहठी, वंशलोचन, धानकी खील, रसोत व मिश्री, इन्होंकी चटनी बना बालकको दीजावे तो सब प्रकारके ज्वरोंको नाशती है ॥४०॥ शालपर्णी, गोखरू, सोंठ, नेत्रवाला, सब प्रकारकी कटेली, गिलोय, चिरायता इन्होंके क्वाथको बालक अथवा दूध पिलानेवाली माता पीवे तो वातज्वर दूर हो और अग्निकी वृद्धि होवे ॥ ४१ ॥ पञ्चमूलका क्वाथ बना पीवे तो वातज्वरका नाश होवे गिलोय, दाख, सपेद अनंतमूल, और खरहटी इन्होंका क्वाथ बना पीवे तो वातज्वरका नाश होता है ॥ ४२ ॥

सारिवोत्पलकाश्मर्य्या छिन्नापद्मकपर्पटैः ॥ क्वाथः पीतो निहंत्याशु शिशूनां पैत्तिकं ज्वरम् ॥ ४३ ॥ मुस्तापर्पटकोशीरवारिपद्मकसाधितम् ॥ शीतं वारि निहंत्याशु त्रिधादाहवमिज्वरान् ॥ ४४ ॥ निम्बपत्रामृतानन्तापटोलेन्द्रयवैः कृतः॥ क्वाथो हन्त्याशु सततं प्रभवो व्यसनं यथा ॥ ४५ ॥

अर्थ—सारिवा, अनन्तमूल, सपेद कमल, कंभारी, गिलोय, पद्माक, पित्तपापडा इन्होंका क्वाथ बना पीवे तो बालकोंका पित्तज्वर शीघ्र नष्ट होता है ॥ ४३ ॥ नागरमोथा, पित्तपापडा, खस, नेत्रवाला, पद्माक इन्होंकरके साधित किया शीतल पानी तीन प्रकारकी दाह छर्दि और ज्वर इन्होंको नाशता है ॥ ४४ ॥ नींबके पत्ते, गिलोय, जवासा, परवल और इन्द्रयव इन्होंका क्वाथ बना पीवे तो बालकोंके सतत अर्थात् निरंतर ज्वरको शीघ्र नाशता है ॥ ४५ ॥

गुडूचीचंदनोशीरधान्यनागरतः कृतः ॥ क्वाथस्तृतीयकं हन्याच्छर्करामधुमिश्रितः ॥४६॥ पलंकषा वचा कुष्ठं गजचर्माविचर्म च ॥ निम्बस्य पत्रं माक्षीकं सर्पिर्युक्तं तु धूपकम् ॥ ज्वरवेगं निहंत्याशु बालानां तु विशेषतः ॥ ४७ ॥

अर्थ—गिलोय, चन्दन, खस, धनियां, सोंठ इन्होंके क्वाथमें खांड और शहद डाल पीवे तो तृतीयक ज्वर नष्ट होता है ॥४६॥ गूगल, वच, कूट, हाथीका चाम, भेडका चाम, नींबके पत्ते, शहद, घृत इन्होंका धूप बालकोंको दिया जावे तो विशेषकरके ज्वरके वेगोंको नाशता है ॥ ४७ ॥

भद्रमुस्ताभयानिंबपटोलमधुकैः कृतः ॥
क्वाथः कोष्णः शिशोरेष निःशेषज्वरनाशनः ॥ ४८ ॥

अर्थ--भद्रमोथा, हरडे, नींबकी छाल, परवल, मुलहठी इन्होंका क्वाथ थोडा गर्म पिलावे तो बालकके सर्व ज्वरको नाशता है ॥४८ ॥

बालो यो चिरजातः स्तन्यं गृह्णाति नो तदा तस्य ॥
सैन्धवधात्रीमधुघृतपथ्याकल्केन घर्षयेज्जिह्वाम् ॥४९॥
कन्याकर्तितसूत्रेण बद्धापामार्गमूलिकाम् ॥
ऐकाहिकं ज्वरं हन्ति शिखायामपि वेगतः ॥ ५० ॥

अर्थ-बहुत कालसे उपजा जो बालक चूचियोंके दूधको नहीं पीवे उसकी जीभको सेंधानिमक, आंवला, शहद, घृत, हरडे इन्होंके कल्कसे घिसे ॥ ४९ ॥ कन्याके हाथसे काता हुआ सूत्र करके बांधी हुई शिखा अर्थात् चोटीपर ऊंगाकी जड बालकके ऐकाहिक ज्वरको वेगसे नाशती है ॥ ५० ॥

मुस्तापर्पटकं छिन्ना किरातो विश्वभेषजम् ॥ एषां कषायो दातव्यो वातपित्तज्वरापहः ॥ ५१ ॥ उशीरं मधुकं द्राक्षा काश्मरी नीलमुत्पलम् ॥ परूषकं पद्म- कश्च मधूकं मधुकं बला ॥ ५२ ॥ एभिः शृतः कषायोऽयं वातपित्तज्वरं जयेत् ॥ प्रलापमूर्च्छासं- मोहतृष्णापित्तज्वरापहः ॥ ५३ ॥

अर्थ-नागरमोथा, पित्तपापडा, गिलोय, चिरायता, सोंठ इन्होंका क्काथ देना वातपित्त ज्वरको नाशता है ॥ ५१ ॥ खस, मुलहठी, दाख, कंभारी, नीला कमल, फालसा, पद्माक, महुवा, मुलहठी, खैरेंटी ॥५२॥ इन औषधोंसे पकाया हुआ क्काथ पिया जावे तो वात पित्तज्वर प्रलाप मूर्च्छा मोह तृषा पित्तज्वर इन्होंको नाशता है, इस क्काथमें दो वार मुलहठी कही है इसलिये मुलहठी दुगुनी लेनी॥५३॥

मूर्वानिशासर्षपरामसेनश्वेतासमंगांबुदकारवीणाम् ॥ छागीपयोभिः सहपेषितानामुद्वर्तनं स्याज्ज्वरजिच्छि- शूनाम् ॥ ५४ ॥ त्रिफला पिचुमन्दश्च पटोलं मधुकं बला ॥ एभिः क्काथः कृतः पीतः पित्तश्लेष्मज्वरा- पहः ॥ ५५ ॥

अर्थ-मरोरफली, हलदी, सरसों, चिरायता, सुपेद अनंतमूल, नागरमोथा, अजमोद इन्होंको बकरीके दूधसे पीस शरीरपर उबटन मलना बालकोंके ज्वरको जीतता है ॥ ५४ ॥ त्रिफला, नींबकी छाल, परवल, मुलहठी, खैरेटी इन्होंका किया क्काथ पिवाजावे तो पित्तकफज्वरको नाशता है ॥ ५५ ॥

अमृतेन्द्रयवारिष्टपटोलं कटुरोहिणी ॥ नागरं चंदनं मुस्ता पिप्पलीचूर्णसंयुतम् ॥ ५६ ॥ अमृताष्टकमित्येतत्पित्तश्लेष्मज्वरापहम् ॥ हृल्लासारोचकच्छर्दितृष्णादाहनिवारणम् ॥ ५७ ॥

अर्थ-गिलोय, इन्द्रयव, नींबकी छाल, परवल, कुटकी, सोंठ, चन्दन, नागरमोथा इन्होंके क्काथमें पीपलका चूर्ण मिला पीवे ॥५६॥ यह अमृताष्टक पित्तकफज्वर, मुखमें थूकका आना, अरुचि, छर्दि, तृषा और दाह इन्होंको दूर करता है ॥ ५७ ॥

धान्यकचन्दनपद्मकमुस्ताशक्रयवामलकैः सपटोलैः॥ शीतकषायमिदं खलु दद्याद्बालकपित्तकफज्वरहंतृ ॥ ॥५८॥ सारग्वधः सातिविषः समुस्तस्तिक्ताकषायो ज्वरमाशु हन्यात् ॥ सामं सशूलं सवमिं सदाहं सकामलं हंति सरक्तपित्तम् ॥ ५९ ॥

अर्थ-धनियां, लालचन्दन, पद्माक, नागरमोथा, इन्द्रयव, आंवला, परवल इन्होंका शीत क्काथ बना बालकको पिलावे यह पित्तकफ ज्वरको नाशता है ॥ ५८ ॥ अमलतास, अतीस, नागरमोथा, कुटकी इन्होंका क्काथ ज्वर, आम. शूल, छर्दि, दाह, कामला और रक्तपित्त इन्होंको नाशता है ॥ ५९ ॥

वासाव्याधिकणालेहः शीतज्वरविनाशनः ॥
तद्वत् क्षुद्रामृताऽनंतातिक्ताभूनिम्बसाधितः ॥ ६० ॥

कटुकीविहितः क्काथः कणाचूर्णसमन्वितः ॥
ऐकाहिकज्वरं हन्ति कासश्वासादिदूषितम् ॥ ६१ ॥

अर्थ-वासा, कटेली, पीपल, इन्होंकी चटनी तथा कटेली, गिलोय, जवासा, कुटकी, चिरायता इन्होंकी चटनी शीतज्वरको नाश करती है ॥ ६० ॥ कुटकीका क्काथ बना उसमें पीपलका चूर्ण डाल पीवे तो खांसी और श्वास आदिसे दूषित हुआ ऐकाहिक ज्वरको नाशता है ॥ ६१ ॥

द्राक्षापटोलत्रिफलापिचुमन्दवृषैः कृतः ॥ क्काथ ऐकाहिकं हन्ति परार्थमिव दुर्जनाः ॥ ६२ ॥ किराततिक्तकं मुस्ता गुडूची विश्वभेषजम् ॥ चातुर्भद्रकमित्याहुर्वातश्लेष्मज्वरापहम् ॥ ६३ ॥

अर्थ-दाख, परवल, हरडे, बहेडा, आंवला, नींबकी छाल इन्होंसे किया क्काथ ऐकाहिक ज्वरको नाशता है जैसे दुष्ट मनुष्य पराये द्रव्यको ॥ ६२ ॥ चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, सोंठ इन्होंका क्काथ चातुर्भद्रकनामवाला कहाहै यह वातकफज्वरको नाशताहै ॥६३॥

मुद्गतण्डुलसंसिद्धं केवलैर्वा मकुष्टकैः ॥ पथ्यमत्र इदं दद्याद्दुःखं वातकफज्वरम् ॥ ६४ ॥ दशमूलीयुतः क्काथः पिप्पलीचूर्णसंयुतः ॥ संमोहतंद्रासमये सन्निपातज्वरं हरेत् ॥ ६५ ॥

अर्थ-मूंग और चावलोंसे बना अथवा अकेले मोठोंसे बना यूषरूप पथ्य यहां देना यह दुःखरूप वातकफज्वरको नाशता है ॥ ६४ ॥ दशमूलका क्काथ बना उसमें पीपलका चूर्ण मिला पियाजावे तो मोह और तंद्राके समयमें वातकफज्वरको नाशता है ॥ ६५ ॥

मुस्तकं चंदनं वासा ह्रीबेरं यष्टिकामृता । एषां

क्वाथस्तु पित्तघ्नस्तृषादाहज्वरापहः ॥ ६६ ॥ वासापर्पटकोशीरनिंबभूनिंबसाधितः ॥ क्वाथो हंति वमिश्वासकासपित्तज्वराञ्छिशोः ॥ ६७ ॥

अर्थ-नागरमोथा, लाल चन्दन, वासा, नेत्रवाला, मुलहठी, गिलोय इन्होंका क्वाथ पित्त तृषा दाह और ज्वर इन्होंको नाशता है ॥६६॥ वासा, पित्तपापडा, खस, नींबकी छाल, चिरायता इन्होंसे साधित किया क्वाथ बालकके छर्दि, श्वास, खांसी और पित्तज्वरको नाशता है ॥ ६७ ॥

अभयामलकी कृष्णा चित्रकोऽयं गणो मतः॥दीपनः पाचनो भेदी सर्वश्लेष्मज्वरापहः ॥ ६८ ॥ कट्फलं पुष्करं शृंगी पिप्पली मधुना सह ॥ एषां लेहो ज्वरं श्वासं कासं मन्दानलं जयेत् ॥ ६९ ॥

अर्थ-हरडे. आंवला, पीपल और चीता यह गण दीपन है० पाचन है, भेदन है और सब प्रकारके कफज्वरोंको नाशता है ॥ ६८ ॥ कायफल, पोहकरमूल, काकडासींगी, पीपल, इन्होंको शहदमें मिला चटनी बनावे यह ज्वर, श्वास, खासी और मन्दाग्नि इन्होंको नाशता है ॥६९ ॥

मधुकं सारिवा द्राक्षा मधूकं चंदनोत्पलम्॥ काश्मरी पद्मकं लोध्रं त्रिफला पद्मकेसरम् ॥ ७० ॥ परूषकं मृणालं च सेव्यं तु तप्तवारिणा ॥ मधुजातसितायुक्तं तत्पीतं पुष्टिदं निशि ॥ ७१ ॥ वातं पित्तं ज्वरं दाहं तृष्णामूर्च्छारुचिभ्रमान् ॥ शमयेद्रक्तपित्तं च जीमूतमिव मारुतः ॥ ७२ ॥

अर्थ-मुलहठी, अनन्तमूल, दाख, महुवा, चन्दन, सपेद कमल, कंभारी, पद्माक, लोध, हरडे, बहेडा, आंवला, कमलकेशर ॥ ७० ॥

फालसा, कमलकी दंडी इन्होंका काथ बना शहदसे उपजी खांडसे युक्त कर रात्रिमें पीवे तो पुष्टिको देता है ॥ ७१ ॥ वातपित्तज्वर, दाह, तृषा, मूर्च्छा, अरुचि, भ्रम, रक्तपित्त इन्होंको नाशता है जैसे बादलको पवन ॥ ७२ ॥

बिल्वं च पुष्पाणि च धातकीनां जलं सलोध्रं गजपिप्पली च।क्काथोऽवलेहो मधुना विमिश्रो बालेषु योज्यः कटिधारितेषु ॥ ७३॥ काकोली गजकृष्णा च लोध्रमेषां समांशतः ॥ क्काथो मध्वन्वितः पीतो बालातीसारहृन्मतः ॥ ७४ ॥

अर्थ--बेलगिरि, धायके फूल, नेत्रवाला, लोध, और गजपीपल इन्होंका काथ बना उसमें शहद मिला कटीके धारण करनवाले बालकोंको पिलाना हित है ॥ ७३ ॥ काकोली, गजपीपल, लोध ये सब बराबर भाग ले क्काथ बना उसमें शहद मिला पीवे यह बालकके अतीसारको नाशता है ॥ ७४ ॥

लाजा सैंधवमाम्रास्थिचूर्णमेषां समांशतः ॥ हंति छर्दिमतीसारं मधुना सह भक्षितम् ॥ ७५ ॥ आम्रबीजं तथा लोध्रं धात्रीफलरसं तथा ॥ पीत्वा माहिषतक्रेण बालातीसारनाशनम् ॥ ७६ ॥

अर्थ--धानकी खील, सेंधानामक, आंबकी गुठली ये सब बराबर भाग ले चूर्ण बना शहदके संग चाटे यह छर्दि और अतीसारको नाशता है ॥ ७५ ॥ आंबकी गुठली, लोध और आंवलोंका रस ये बराबर भाग ले चूर्ण बना भैंसके तक्रमें मिला पीवे तो बालकोंके अतीसारका नाश होता है ॥ ७६ ॥

कालिन्यंजनमुस्तानां चूर्णं पीतं समाक्षिकम्॥ तृष्णाछर्दिमतीसारं बालानां तत्त्वतो हरेत् ॥ ७७ ॥ श्या-

मा रसांजनं चूतफलास्थिसमचूर्णितम् ॥ हंति छर्दि-
मतीसारं बालानां मधुनाशितम् ॥ ७८ ॥

अर्थ--त्रायमाण अर्थात् वनफसा विशेष, रसोत, नागरमोथा इन्होंके चूर्णमें शहद मिला चाटे यह बालकोंके तृषा, छर्दि, अतीसार इन्होंको निश्चय हरताहै ॥ ७७ ॥ पीपल, रसोत, आंबकी गुठली ये बराबर भाग ले चूर्ण बना शहदमें मिला चाटे यह बालकोंकी छर्दि और अतीसारको नाशता है ॥ ७८ ॥

धातकीबिल्वधान्याकलोध्रेंद्रयवबालकैः॥ लेहः क्षौद्रेण बालानां ज्वरातीसारकं जयेत् ॥७९॥ लोध्रेण पिप्पलीबालो बालकातिसृतौ हितः॥श्रीरसो माक्षिकयुतो धातकीकुसुमैः समः ॥ ८० ॥

अर्थ--धायके फूल, बेलगिरि, धनियां, लोध, इन्द्रयव, नेत्रबाला इन्होंके चूर्णमें शहद डाल चाटे यह बालकोंके ज्वर और अतीसारको जीतता है ॥ ७९ ॥ लोध, पीपल, नेत्रबाला इन्होंके चूर्णको अथवा श्रीवेष्ट धूप और धायके फूलोंका चूर्ण शहदमें मिला चाटे तो बालकोंके अतीसारमें हित करता है ॥ ८० ॥

विडंगान्यजमोदा च पिप्पलीचूर्णिकानि च ॥ एषामालिह्य चूर्णानि सुखं तप्तेन वारिणा ॥ ८१ ॥ आमे प्रवृत्तेऽतीसारे कुमारं पाययेद्भिषक् ॥ ८२ ॥ यवानी जीरकं व्योषं कुटजं विश्वभेषजम् ॥ एतन्मधुयुतं पीतं बालानां ग्रहणीं जयेत् ॥८३॥ पिप्पली विजया शुंठी चूर्णं मधुयुतं भिषक् ॥ दत्त्वा निहत्य ग्रहणीरुजां नियतमाप्नुयात् ॥ ८४ ॥

अर्थ-वायविडंग, अजमोद, पीपल इन्होंका चूर्ण सुखपूर्वक गरम किये पानीके संग वैद्य बालकको पिलावे तो आमसे उपजे अतीसारमें हित होता है ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ अजवायन, जीरा, सोंठ, मिरच, पीपल, इन्द्रयव, सोंठ इन्होंका चूर्ण बना शहदमें युक्त कर बालक पीवें तो ग्रहणी रोग दूर होता है । यहां सोंठ दो वार कही है इस वास्ते दुगुनी सोंठ लेनी ॥८३॥ पीपल, भांग, सोंठ इन्होंका चूर्ण बनाय वैद्य बालकको देवे तो ग्रहणीरोगका नाश होके आरोग्यकी प्राप्ति होती है ॥ ८४ ॥

कृष्णा महौषधं बिल्वं नागरः सयवानिकः ॥ मधुसर्पिर्युतं लीढं बालानां ग्रहणीं हरेत् ॥ ८५ ॥ नागरं मुस्तकं बिल्वं चित्रकं ग्रंथिकं शिवाम् ॥ चूर्णमेतन्मधुयुतं कफजां ग्रहणीं जयेत् ॥ ८६ ॥ सगुडं नागरं बिल्वं यः खादति हिताशनः ॥ त्रिदोषग्रहणीरोगान्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ८७ ॥

अर्थ–पीपल, सोंठ, बेलगिरी, नागरमोथा, अजवायन इन्होंका चूर्ण बनाय शहद और घृतसे मिलाय चाटे तो बालकोंका ग्रहणी रोग दूर होता है ॥ ८५ ॥ सोंठ, नागरमोथा, बेलगिरी, चीताकी जड, पीपलामूल, हरडे इन्होंका चूर्ण बनाय शहदसे युक्त कर चाटे तो कफका ग्रहणीरोग दूर होता है ॥ ८६ ॥ जो मनुष्य हितरूप भोजनको करता हुआ सोंठ और बेलगिरीके चूर्णको गुडके साथ खावे वह त्रिदोषके ग्रहणीरोगसे छूटजाता है इसमें संशय नहीं॥८७॥

मुस्तकातिविषा बिल्वं चूर्णितं कौटजं तथा ॥ क्षौद्रेण लीढं ग्रहणीं सर्वदोषोद्भवां जयेत् ॥ ८८ ॥ मोचरसं समंगा च धातकी पद्मकेसरम् ॥ पिष्टैरेतैर्यवागूः स्याद्रक्तातीसारनाशिनी ॥ ८९ ॥ नागरा-

तिविषामुस्तावालकेंद्रयवैः कृतम् ॥ कुमारं पाययेत्प्रातः सर्वातीसारनाशनम् ॥ ९० ॥

अर्थ—नागरमोथा, अतीस, बेलगिरी, इन्द्रयव इन्होंका चूर्ण बना शहदसे मिलाय चाटे तो सन्निपातसे उपजा रोग दूर होता है ॥ ८८ ॥ मोचरस, मँजीठ, धायके फूल, कमलकी केशर इन्होंको पीस यवागू अर्थात् गुडबनी बनाय पीवे तो रक्तातीसारका नाश होता है ॥ ८९ ॥ सोंठ, अतीस, नागरमोथा, नेत्रवाला, इन्द्रयव इन्होंका क्काथ बनाय प्रभातमें बालकको पिलावे तो सब प्रकारका अतीसार नष्ट होता है ॥ ९० ॥

लोध्रेंद्रयवधान्याकधात्रीह्रीबेरमुस्तकम् ॥ मधुना लेहयेद्बालं ज्वरातीसारनाशनम् ॥ ९१ ॥ रजनी सरलो दारुर्बृहती गजपिप्पली ॥ पृश्निपर्णी शतावा च लीढा माक्षिकसर्पिषा ॥ ९२ ॥ दीपनं ग्रहणीं हंति मारुतार्तिं सकामलाम् ॥ ज्वरातिसारं पांडुत्वं बालानां सर्वरोगनुत् ॥९३ ॥

अर्थ-लोध, इन्द्रयव, धनियां, आंवला, नेत्रवाला, नागरमोथा इन्होंके चूर्णको शहदमें मिलाय बालकको चटावे तो ज्वरातीसारका नाश होता है ॥ ९१ ॥ हलदी, सरल, देवदार, कटेहली, गजपीपल, पिठवन, शतावरी इन्होंके चूर्णको शहद और घृतमें मिलाय चाटे ॥९२ ॥ यह अग्निको जगाता है बालकोंके ग्रहणीदोष वातरोग कामला ज्वरातीसार पांडु आदि सब प्रकारके रोगोको दूर करता है ॥ ९३ ॥

ह्रीबेरशर्कराक्षौद्रं पीतं तंडुलवारिणा ॥ शिशोरक्तातिसारघ्नं कासश्वासवमिं हरेत् ॥९४॥ यवानी नागरं पाठा दाडिमं कुटजं तथा ॥ चूर्णोऽयं गुडतक्राभ्यां

पीतोर्शस्तंभनः परः ॥ ९५ ॥ अजाजी पौष्करं पाठा त्र्यूषणं दहनं शिवा ॥ गुडेन गुटिका ग्राह्या सर्वार्शश्शोधनी यतः ॥ ९६ ॥

अर्थ–नेत्रवालाके चूर्णको खांड और शहदमें मिलाय चावलोंके पानीसे पीवे तो बालकके रक्तातीसार, खांसी, श्वास, छर्दि इन्होंका नाश होता है ॥ ९४ ॥ अजवायन, सोंठ, पाठा, अनारकी छाल, इन्द्रयव इन्होंका चूर्ण बनाय गुड और तक्रके संग पीवे तो बवासीरका मस्सा बढता नहीं है ॥ ९५ ॥ जीरा पोहकरमूल, पाठा, सोंठ, मिरच, पीपल, चीता, हरड इन्होंको पीस गुडमें गोली बना खावै तो यह सब प्रकारके बवासीरके मस्सोंको शोधती है ॥ ९६ ॥

नवनीततिलाभ्यासात्केशरनवनीतशर्कराभ्यासात् ॥ दधिसारमथिताभ्यासाद्गुदजाःशाम्यंति रक्तवहाः९७॥ एवं वा कौटजं बीजं रक्तार्शो मधुना हरेत् ॥ तद्वन्मुस्तामोचरसः कपिकच्छुभवो रजः ॥ ९८ ॥ धान्यनागरजः क्वाथः शूलामाजीर्णनाशनः ॥ चूर्णस्तत्र शुभः पीतस्तद्वद् व्योषाग्निजीरकैः ॥ ९९ ॥

अर्थ–नौनी घृत और तिलोंको नित्यप्राति खानेसे अथवा नागकेशर नौनी घृत और तिलोंको नित्यप्राति खानेसे अथवा सुंदर मठेको नित्यप्राति पीनेसे रक्तको बहानेवाले गुदाके मस्से शांत होजाते हैं॥९७ ॥ इन्द्रयवको शहदमें मिलाय चाटे अथवा नागरमोथा, मोचरस, कौंचके बीज इन्होंके चूर्णको शहदमें मिलाय चाटे तो रक्तकी बवासीर नष्ट होती है ॥ ९८ ॥ धनियां और सोंठका क्वाथ बनाय अथवा उसमें सोंठ, मिरच, पीपल, चीता, जीरा इन्होंका चूर्ण मिलाय पीवे तो आमशूल और अजीर्ण नाश होता है ॥ ९९ ॥

पिप्पली रुचकं पथ्याचूर्णं मस्तुजलं पिबेत् । सर्वाजीर्णहरः शूलगुल्मानाहाग्निमांद्यजित् ॥१००॥ त्वक्पत्रारास्नागुरुशिग्रुकुष्ठैरम्लप्रपिष्टैः सबलासिताह्वैः ॥ अजीर्णकघ्नं च विषूचिकाघ्नं तैलं विपक्कं च तदर्थकारि ॥१०१॥ अन्नपानैर्गुरुस्निग्धैर्मंद्रसांद्रहिमास्थिरैः ॥ पित्तघ्नै रेचनैर्धीमान् भस्मकं प्रशमं नयेत् ॥ १०२ ॥

अर्थ--पीपल, कालानमक, हरडे इन्होंके चूर्णको खाके दहीका पानी पीवे तो सब प्रकारके शूल, गुल्म, अफरा, मंदाग्नि इन्होंको जीतता है ॥१००॥ दालचीनी, तेजपात, रायसन, अगर, सहँजनेकी छाल, कूठ, खरैंटी, मिश्री, इन्होंको चूकेके रसमें पीस देवे अथवा इन औषधोंमें तेलको सिद्ध कर देवे यह अजीर्ण और विषूचिका अर्थात् हैजा विशेषको नाशता है ॥१०१ ॥ भारी चिकना मंद्र गीला शीतल और स्थिर ऐसे अन्नपानों करके तथा पित्तके नाशनेवाले जुलावों करके बुद्धिमान् वैद्य भस्मक रोगको शांत करे ॥ १०२ ॥

औदुंबरत्वचं पिष्ट्वा नारीक्षीरयुतं पिबेत् ॥ ताभ्यां च पयसा सिद्धं भुक्तं जयति भस्मकम् ॥१०३॥ मयूरैस्तंडुले सिद्धं पायसं भस्मकं जयेत् ॥ विदारीस्वरसे क्षीरे सिद्धं वा महिषीघृतम् ॥ १०४ ॥ धान्याकं शर्करायुक्तं तंडुलोदकसंयुतम् ॥ पानमेतत्प्रदातव्यं कासश्वासापहं शिशोः ॥ १०५ ॥

अर्थ-गूलरकी छालको पीस नारीके दूधमें मिलाय पीछे गायके दूधमें सिद्ध कर पीवे तो भस्मक रोग दूर होता है ॥१०३ ॥ सुफेद

ऊंगाकी जड और चावलोंकी खीर बनावे अथवा विदारीकंदके स्वरसमें दूध डाल उसमें भैंसके घृतको सिद्ध कर खावे तो भस्मकरोग दूर होवे ॥ १०४ ॥ धनियाको पीस खांडमें मिलाय चावलोंके पानीके संग पीवे तो बालककी खांसी और श्वासरोग नष्ट होवे ॥ १०५ ॥

दुरालभा कणा द्राक्षा पथ्या क्षौद्रेण लेहयेत् ॥ त्रिरात्रं पंचरात्रं वा कासश्वासहराः शिशोः ॥ १०६ ॥ हिंगुकर्कटशृंगी च गैरिकं मधुयष्टिका ॥ त्रुटिक्षौद्रं नागरं च हिक्काश्वासनिवारणम् ॥ १०७ ॥ कृष्णा दुरालभा द्राक्षा कर्कटाख्या गजाह्वया ॥ चूर्णिता मधुसर्पिर्भ्यां लीढ्वा हंति शिशोर्गदान् ॥ कासः श्वासश्च तमकं ज्वरो वापी विनश्यति ॥ १०८ ॥

अर्थ--जवासा, पीपल, दाख, हरडे इन्होंको शहदमें मिलाय तीन रात्रि अथवा पांच रात्रि चाटे तो बालककी खांसी और श्वास नष्ट होवे ॥ १०६ ॥ हींग, काकडासींगी, गेरू, मुलहठी, छोटी इलायची, सोंठ इन्होंके चूर्णको शहदमें मिलाय चाटे तो हिचकी और श्वास दूर होता है ॥ १०७॥ पीपल, जवासा, दाख, काकडासींगी, पँवाडके बीज इन्होंका चूर्ण बनाय शहद और घृतमें मिलाय चटावे तो बालककी खांसी श्वास तमकश्वास और ज्वर ये रोग नष्ट होतेहैं ॥१०८ ॥

शृंगीसमुस्तातिविषां विचूर्ण्य लेहं विदध्यान्मधुना शिशूनाम् । कासज्वरच्छर्दिसमन्वितानां समाक्षिकं वातिविषासमेतम् ॥ १०९ ॥ गुडोदकं वा क्वाथिकं व्योषसैंधवसंयुतम् ॥ सुखोष्णं पाययेद्बालं कासरोगोपशांतये ॥ ११० ॥ विहितो मधुना लेहो व्याघ्री

कुसुमकेसरैः ॥ लीढो हि नाशयत्याशु कासं पंच-विधं शिशोः ॥ १११ ॥

अर्थ-काकडासींगी, नागरमोथा, अतीस इन्होंका चूर्ण बनाय शहदमें मिलाय चटावे तो बालकोंकी खांसी ज्वर छर्दि इन्होंका नाश होता है अथवा अतीसके चूर्णको शहदमें मिलाय चटावे तो बालकोंकी खांसी ज्वर और छर्दि आदि रोग दूर होते हैं ॥१०९॥ गुडका पानी बनाय उसमें सोंठ मिरच पीपल और सेंधानमक मिलाय सुखपूर्वक गरम २ बालकको पिलावे तो खांसीरोगकी शांति होती है ॥ ११०॥ कटेली, लौंग, नागकेशर, इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय चटावे तो बालकोंकी पांच प्रकारकी खांसी शीघ्र नष्ट होती है ॥ १११ ॥

एका शृंगी निहंत्याशु मूलकस्य फलान्विता ॥ घृतेन मधुना लीढा कासं बालस्य दुस्तरम् ॥११२॥ तुगां च क्षौद्रैः संलिह्याच्छ्वासकासौ शिशोर्जयेत् ॥११३॥ विडंगं मधुना लीढं पुष्करं बालशिग्रुकम् ॥ आखु-पर्णी तथैका वा कृमिभ्यो मुच्यते शिशुः ॥११४॥

अर्थ-काकडासींगी और मूलीके बीजोंका चूर्ण बनाय घृत और शहदमें मिलाय बालकको चटावे तो भयंकर खांसीभी दूर होती है ॥११२ ॥ वंशलोचनके चूर्णको शहदमें मिलाय चटावे तो बालकके श्वास और खांसी दूर होती है ॥ ११३॥ वायविडंगके चूर्णको अथवा पोहकरमूल और छोटे सहिंजनेके फलके चूर्णको अथवा अकेली मूसापर्णीके चूर्णको शहदमें मिलाय चटावे तो बलक कीडोंसे छूट जाता है ॥ ११४ ॥

पौष्करातिविषा शृंगीमागधीधन्वयासकैः ॥ कृतं चूर्णं तु सक्षौद्रं शिशूनां श्वांसकासजित् ॥ ११५ ॥

मुस्तकातिविषावासाकणाभृंगीरसं लिहन् ॥ मधुना मुच्यते बालः कासैः पंचभिरुच्छ्रितैः ॥ ११६ ॥ व्याघ्रीकुसुमसंजातकेशरैरवलेहिका ॥ मधुना चिरसंजातान्शिशोः कासान् व्यपोहति ॥ ११७ ॥

अर्थ—पोहकरमूल, अतीस, काकडासींगी, पीपल, जवासा इन्होंके चूर्णको शहदमें मिलाय चटावे तो बालकोंकी पांच प्रकारकी खांसी दूर होती है ॥ ११५ ॥ नागरमोथा, अतीस, वासा, पीपल, काकडासींगी इन्होंके रसको शहदमें मिलाय चटावे तो बालकोंकी बढी हुई पांच प्रकारकी खांसी दूर होती है ॥ ११६ ॥ कटेली, लौंग, नागकेशर इन्होंके चूर्णको शहदमें मिला चटनी बना दे तो यह बालकोंकी पुरानी खासियोंको दूर करती है ॥ ११७ ॥

सुवर्णगैरिकं पिष्ट्वा मधुना सह लेहयेत् ॥ शीघ्रं सुखमवाप्नोति तेन हिक्कार्दितः शिशुः ॥ ११८ ॥ पिप्पलीरेणुकाक्काथः सहिंगुः समधुः कृतः ॥ हिक्कां बहुविधां हन्यादिदं धन्वंतरेर्वचः ॥ ११९ ॥ चूर्णं कटुकरोहिण्या मधुना सह योजयेत् ॥ हिक्कां प्रशमयेत्क्षिप्रं छर्दिं चापि चिरोत्थिताम् ॥ १२० ॥

अर्थ—सुनहरे गेरूको पीस शहदमें मिलाय बालकको चटावे तो हिचकी रोग शीघ्र दूर होता है ॥ ११८ ॥ पीपल और रेणुकाके क्काथमें हींगका चूर्ण और शहद मिलाय पीवे तो बहुत प्रकारकी हिचकी नष्ट होती है, धन्वंतरिजीका यह वचन है ॥ ११९ ॥ कुटकीके चूर्णको शहदमें मिलाय बालकको चटावे तो हिचकी और बहुत दिनोंकी छर्दि शीघ्र शांत होती है ॥ १२० ॥

यवानीकुटजारिष्टसप्तपर्णपटोलकैः ॥ लेहश्छर्दिमतीसारं ज्वरं बालस्य नाशयेत् ॥१२१॥ हरीतक्याः

कृतं चूर्णं मधुना सह लेहयेत् ॥ अधस्ताद्विहिते दोषे शीघ्रं छर्दिः प्रशाम्यति ॥ १२२ ॥ अश्वत्थवल्कलं शुष्कं दग्धं निर्वापितं जले ॥ तज्जलं पानमात्रेण छर्दिं जयति दुर्जयाम् ॥ १२३ ॥

अर्थ-अजवायन, इन्द्रयव, नींबकी छाल, सात्विन, परवल इन्होंका लेह बनाय बालकको चटावे तो छर्दि अतीसार और ज्वर इन्होंका नाश होता है १२१ ॥ हरडोंके चूर्णको शहदमें मिलाय बालकको चटानेसे दोष नीचेको गमन करता है तब शीघ्र छर्दि शांत हो जाती है ॥ १२२ ॥ पीपलकी छालको सुखाके अग्निमें जलाय उस राखको पानीमें मिलाके उस जलको पीनेसे भयंकर छर्दि भी दूर होजाती है ॥ १२३ ॥

तालानां जलमुस्तानां चूर्णं पीतं समाक्षिकम् ॥ तृष्णांछर्दिमतीसारं शिशूनामुद्धतं हरेत् ॥ १२४ ॥ आम्रास्थिलाजसिंधूत्थं सक्षौद्रं छर्दिनुद्भवेत्॥ १२५॥ घनशृंगीविषाणां च चूर्णं हंति समाक्षिकम् ॥ वांतिज्वरं तथा योगो मधुनातिविषारजः ॥ १२६ ॥

अर्थ-ताड, जलमोथा इन्होंके चूर्णको शहदमें मिलाय बालकोंको चटावे तो तृषा, छर्दि, अतीसार ये नष्ट होते हैं ॥ १२४ ॥ आमकी गुठली, धानकी खील, सेंधानमक, इन्होंके चूर्णको शहदमें मिलाय बालकोंको चटावे तो छर्दि रोग दूर होता है ॥ १२५ ॥ नागरमोथा, काकडासींगी, अतीस इन्होंके चूर्णको शहदमें मिलाके अथवा अतीसके चूर्णको शहदमें मिलाके चाटे तो बालकोंके छर्दि और ज्वर नष्ट होते हैं ॥ १२६ ॥

पीतंपीतं वमेद्यस्तु स्तन्यं तं मधुसर्पिषा ॥ द्विवातांकीफलरसं पंचकोलं च लेहयेत् ॥ १२७ ॥ पिप्पलीमधुकानां च चूर्णं समधुशर्करम् ॥ मातुलुंगरसे-

नैव हिक्काछर्दिनिवारणम् ॥ १२८ ॥ पिप्पली मधुकं जंबूरसालतरुपल्लवाः ॥ चूर्णोऽयं मधुना चेति तृष्णाप्रशमनः शिशोः ॥ १२९ ॥

अर्थ—जो बालक पिये हुये दूधको गेरै उसको दोनों कटेलीके फलोंका रस पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ इन्होंके चूर्णको शहद, घृतमें मिलाय चटावे ॥ १२७ ॥ पीपल और महुआके चूर्णको शहद और खांडमें मिलाय बिजोरेके रसके संगमें पीवे तो हिचकी और छर्दि दूर होती है ॥ १२८ ॥ पीपल, मुलहठी, जामुनके पत्ते, आमके पत्ते इन्होंके चूर्णको शहदमें मिलाय चटावे तो बालककी तृषा दूर होती है ॥ १२९ ॥

हिंगुसैंधवपालाशचूर्णं माक्षिकसंयुतम् ॥ लीढं निवारयत्याशु शिशूनामुद्धतां तृषाम् ॥ १३० ॥ घृतेन सिंधुविश्वैलाहिंगुभार्ङ्गीरजो लिहन् ॥ आनाहवातिकं शूलं हन्यात्तोयेन वा शिशोः ॥ १३१ ॥ पिप्पलीत्रिफलाचूर्णं घृतक्षौद्रपरिप्लुतम् ॥ बालो रोदिति यस्तस्मै लेढुं दद्यात्सुखावहम् ॥ १३२ ॥

अर्थ—हींग, सेंधानमक, ढाकके पत्ते इन्होंके चूर्णको शहदमें मिलाय बालकको चटावे तो बढी हुई तृषा शीघ्र दूर होती है ॥१३०॥ सेंधानमक, सोंठ, इलायची, हींग, भारंगीकी जड इन्होंके चूर्णको घृतके संग अथवा पानीके संग पीवे तो बालकका अफरा और वायुशूल नष्ट होता है ॥ १३१ ॥ जो बालक रोता हो उसको पीपल, हरडा, बहेडा, आँवला इन्होंके चूर्णको घृत, शहदमें मिलाय चटावे तो सुख उपजता है ॥ १३२ ॥

पिष्ट्वा गंधर्वबीजानि त्वाखुविड्निम्बुवारिणा ॥ नाभौ गुदे वा लेपेन शिशूनां रेचनं परम् ॥ १३३ ॥ इंदु-

लोचननेत्राणि शिखिभागं हि योजयेत् ॥ त्रुटिगंध-कमुर्दाडशतपुष्पाविचूर्णिताः ॥ १३४ ॥ माषद्वयं गवां दुग्धैः सेवयेद्दिनपंचकम् ॥ रेचयेन्मृत्तिकां शुद्धां शिशूनां हितमौषधम् ॥ १३५ ॥

अर्थ-एरंडके बीज और मूसाकी मेंगनियोंको नींबूके रससे पीस बालकोंकी नाभीपर अथवा गुदापर लेप करनेसे दस्त लगते हैं ॥ १३३ ॥ छोटी इलायची एकभाग, गंधक दो भाग, मुरदारसिंग तीन भाग, सौंफ चार भाग ॥ १३४ ॥ इन्होंका चूर्ण बनाय दो मासेभर चूर्णको गायके दूधके संग पांच दिनतक सेवे तो शुद्ध मिट्टी गुदासे निकलती है, बालकोंको यह औषध बहुत हित है ॥ १३५ ॥

यथा तु दुर्बलो बालः खादन्नपि च वह्निमान् ॥ विदारी-कंदगोधूमयवचूर्णं घृतप्लुतम् ॥१३६॥ खादयेत्तदनु क्षीरं शृतं समधुशर्करम् ॥ सौवर्णसुकृतं चूर्णं कुष्ठं मधु घृतं वचा ॥१३७॥ मत्स्याक्षकः शंखपुष्पी मधु सर्पिस्सकांचनम् ॥ अर्कपुष्पी घृतं क्षौद्रं चूर्णितं कनकं वचा ॥ सहेमचूर्णकैटर्यं श्वेतदूर्वा घृतं मधु ॥ १३८ ॥ चत्वारोऽभिहिताः प्राश्या अर्धश्लोकसमापनाः ॥ कुमाराणां वपुर्मेधाबलपुष्टिकराः स्मृताः ॥ १३९ ॥

अर्थ-जो बालक खाता हुआ भी और अग्निवालाभी दुर्बल होता जावे उसको विदारीकन्द, गेहूँ, यव इन्होंके चूर्णको घृतमें मिलाय ॥ १३६ ॥ खवावे और पीछे खांड और शहदसे संयुक्त किया गरम दूध पिलावे, गूलरके फलका चूर्ण, कूट, शहद, घृत, वच ॥ १३७ ॥ अथवा कावली, शंखपुष्पी, गूलरका फल, शहद, घृत अथवा अर्कपुष्पी, घृत शहद, गूलरका फल, वच

अथवा गूलरका फल, कायफल, सुफेद दूब, घृत, शहद ॥ १३८ ॥ ये आधे आधे श्लोकमें पूर्ण होनेवाले चार अवलेह कहे हैं ये बालकोंके शरीर, बुद्धि, बल और पुष्टिको करनेवाले कहे हैं ॥ १३९ ॥

लाक्षारसे समं तैलं मस्तुन्यथ चतुर्गुणे ॥ रास्नाचंदनकुष्ठाब्दवाजिगंधानिशायुतैः ॥ १४० ॥ शताह्वदारुयष्ट्याह्वमूर्वातिक्ताह्वरेणुभिः ॥ संसिद्धं ज्वररक्षोघ्नं बलवर्णकरं शिशोः ॥ १४१ ॥ पादकल्केऽश्वगंधायाः क्षीरेऽष्टगुणिते पचेत् ॥ घृतं देयं कुमाराणां पुष्टिकृद्बलवर्द्धनम् ॥ १४२ ॥

अर्थ—लाखका क्वाथ और तेल बराबर भाग ले उसमें चौगुना दहीका पानी और रायसन, चन्दन, कूठ, नागरमोथा, असगंध, हलदी, दारुहलदी ॥ १४० ॥ सौंफ, देवदारु, मुलहठी, मरोरफली, कुटकी और रेणुका, इन्होंका कल्क मिलाय तेलको सिद्ध करे यह तेल बालकके ज्वर और राक्षस दोषको नाशता है, बल और वर्णको करता है ॥ १४१ ॥ असगंधके एक भाग कल्कमें आठ भाग दूध मिलाय उसमे घृत सिद्ध करना, यह घृत बालकोंको देनेसे पुष्टिको करता है और बलको बढाता है ॥ १४२ ॥

मुस्ताकूष्मांडबीजानि भद्रदारुकलिंगकान् ॥ पिष्ट्वा तोयेन संलिप्येल्लेपोऽयं शोथहृच्छिशोः ॥ १४३ ॥ मृत्पिंडेनाग्नितप्तेन क्षीरसिक्तेन सोष्मणा ॥ स्वेदयेदुत्थितां नाभिं शोथस्तेनोपशाम्यति॥ १४४॥ नाभिपाके निशालोध्रप्रियंगुमधुकैः शृतम् ॥ तैलमभ्यञ्जने शस्तमेभिश्चात्रावधूलनम्॥ १४५॥ दुग्धेन छागशकृता नाभिपाकेऽवचूर्णनम् ॥ त्वक्चूर्णैः क्षीरिणां वापि कुर्याच्चंदनरेणुना ॥ १४६॥

अर्थ-नागरमोथा, कोहलाके बीज, देवदारु, इन्द्रयव, इन्होंको पानीसे पीस बालकको किया लेप शोजाको हरता है ॥ १४३ ॥ मिट्टीके गोलेको अग्निमें तपाय दूधमें बुझावे उस दूधकी गरमाईसे बालककी उठी हुई सूंडीको स्वेदित करे उस करके शोजा शांत होता है॥१४४॥बालककी नाभिके पकजानेमें हलदी, लोध, मेहँदी, मुलहठी इन्होंके काथमें तेलको सिद्ध कर लगावे अथवा इन्हीं औषधियोंके चूर्णको मसले ॥ १४५ ॥ बकरीकी मेंगनियोंको दूधमें पीस नाभिके पकने पर लेप करे, अथवा दालचीनी, चन्दन, दूधवाले वृक्ष इन्होंके चूर्णको नाभिपाकपर मसले ॥ १४६ ॥

गुदपाके तु बालानां पित्तघ्नीं कारयेत्क्रियाम् । रसांजनं विशेषेण पानलेपनयोर्हितम् ॥ १४७ ॥ शंखयष्ट्यंजनैश्चूर्णं शिशूनां गुदपाकनुत् ॥ पारिगर्भिकरोगे तु युज्यते वह्निदीपनम् ॥१४८॥ पटोलत्रिफलारिष्टहरिद्राक्वथितं पिबेत् ॥ क्षतविस्फोटज्वराणां शांतये बालकस्य च ॥१४९॥

अर्थ-बालकोंकी गुदा पकनेमें पित्तकी नाशनेवाली क्रिया करावे और विशेष करके रसोत पीनेमें और लेपमें हित है ॥१४७॥ शंख, मुलहठी, रसोत इन्होंका चूर्ण बालकोंके गुदापाकरोगको दूर करता है, बालकोंके पारिगर्भिक रोगमें वह्निदीपन अर्थात् अग्निको जगानेवाला औषध देना ॥१४८॥ परवल, हरडे, बहेडा, आंवला, नींबकी छाल, हलदी, इन्होंके काथको पीवे तो बालकके क्षत फोडे और ज्वरादि शांत होते हैं ॥ १४९ ॥

गृहधूमनिशाकुष्ठराजिकेंद्रयवैः शिशोः ॥ लेपस्तक्रेण हंत्याशु सिध्मपामाविचर्चिकाः॥१५०॥ तालुपाके यवक्षारमधुभ्यां प्रतिसारणम् ॥ १५१ ॥

दंतपालीं तु मधुना चूर्णेन प्रतिसारयेत् ॥ धातकी-पुष्पपिप्पलीधात्रीफलरसेन वा ॥ १५२ ॥ दंतोत्था-नभवा रोगाः पीडयंति न बालकम् ॥ जाते दंते हि शाम्यन्ति यतस्तद्धेतुका गदाः ॥ १५३ ॥

अर्थ—घरका धुवा, हलदी, कूट, राई, इन्द्रयव इन्होंको तक्रमें पीस बालकके देहमें कियाहुआ लेप सींप, पामा और विचर्चिका इन्होंको शीघ्र नाशता है॥१५०॥ बालकका तालुवा पकजानेमें जवाखार और शहदसे मालिश करनी ॥ १५१ ॥ बालकके दंतपाली अर्थात् दंतरोग उपजे तो धायके फूल, पीपल, आंवला इन्होंके रसमें शहद मिलाय मालिस करावे ॥१५२॥ दांतोंके जमनेसे उपजे जो रोग वे बालकको पीडा नहीं देते हैं क्योंकि जब दांत ऊगि आते हैं तब आपही रोग शांत हो जाते हैं क्योंकि दांतोंके कारणरूप रोग हैं ॥ १५३ ॥

प्राचीगतं पांडुरसिंधुवारमूलं शिशूनां गलके निबद्धम्॥ हंत्याशु दंतोद्भववेदनां च निःशेषमेकांडकुरंडमेव ॥ १५४ ॥ जातीपत्रामृताद्राक्षापाठाद्रव्यैः फल-त्रिकैः ॥ क्वाथः क्षौद्रयुतः शीतो गंडूषो मुखपाक-जित् ॥ १५५ ॥

अर्थ—पूर्वदिशामें उपजी सुपेद संभालूकी जडको बालकोंके गलेमें बांधे तो बालकोंके दांत ऊगनेके समयकी पीडा और पोतोंका छिट-कना और कुरंड रोग इन्होंका नाश होता है ॥ १५४ ॥ जावित्री, दूध, दाख, पाठा, हरडे, बहेडा, आंवला इन्होंके क्वाथको शीतल कर उसमें शहद मिलाय बालकको कुल्ले करावे तो मुखपाकरोग शांत होता है ॥ १५५ ॥

सारिवातिक्तलोध्राणांकषायो मधुकस्य च ॥ संस्रावी विमुखे शस्तो धावनार्थं शिशोः सदा ॥ १५६ ॥

मुखपाके तु बालानामाम्रसारमयोरजः॥ गैरिकं क्षौद्र-संयुक्तं भेषजं सरसांजनम् ॥ १५७ ॥ दार्वीयष्ट्य-भयाजातिपत्रक्षौद्रैस्तु धावनम् ॥ अश्वत्थत्वग्दल-क्षौद्रैर्मुखपाके प्रलेपनम् ॥ १५८ ॥

अर्थ-सारिवा, अनंतमूल, चिरायता, लोध, मुलहठी इन्होंके काथमें शहद मिलावे इस करके बालकका झिरता हुआ मुख धोवे तो उत्तम है ॥ १५६ ॥ बालकोंके मुखपाकरोगमें आंबका खार लोहेकी भस्म, गेरू, रसोत इन्होंका चूर्ण कर शहदमें मिलाय लगाना उत्तम औषध है॥ १५७ ॥ दारुहलदी, मुलहठी, हरडे, चमेलीके पत्ते, शहदसे पीस मुखपाकमें लेप करे ॥ १५८ ॥

हरीतकीवचाकुष्टकल्कं माक्षिकसंयुतम् ॥ पीत्वा कुमारः स्तन्येन मुच्यते तालुकंटकात् ॥ १५९ ॥ मेधामृतानागरवाजिगंधाधात्रीत्रिकंटैर्विहितः कषायः॥ क्षौद्रेण पीतः शमयत्यवश्यं मूत्रस्य कृच्छ्रं पवन-प्रभूतम् ॥ १६०॥ यवक्षारयुतः क्वाथः स्वादुकंटक-संभवः ॥ पीतः प्रणाशयत्याशु मूत्रकृच्छ्रं कफो-द्भवम् ॥ १६१ ॥

अर्थ-हरडे, वच, कूठ इन्होंके कल्कमें शहद मिलाय दूधके संग बालक पीवे तो तालुकंटक रोग दूर होता है ॥ १५९ ॥ नागरमोथा, गिलोय, सोंठ, असगंध, आंवला, गोखरू इन्होंके क्काथमें शहद मिलाय पीवे तो वातसे उपजा मूत्रकृच्छ्र निश्चय शांत होता है ॥ १६० ॥ गोखरूके क्काथमें जवाखार मिलाय पीवे तो कफसे उपजा मूत्रकृच्छ्र शीघ्र नष्ट होता है ॥ १६१ ॥

एरंडतैलं सपयः पिबेद्यो गव्येन मूत्रेण तदेव पीत्वा ॥ सगुग्गुलुः प्रौढरुजं प्रवृद्धं सवातव्याधिं सहसा निहन्ति ॥ १६२ ॥ कर्पूरवर्तिं मृदुना लिंगच्छिद्रे निधारयेत् ॥ शीघ्रं तया महाघोरान्मूत्रबंधात्प्रमुच्यते॥१६३॥कणोषणसिताक्षौद्रसूक्ष्मैलासैंधवैः कृतः॥ मूत्रग्रहे प्रयोक्तव्यः शिशूनां लेह उत्तमः ॥ १६४ ॥

अर्थ—दूधसहित एरंडके तेलको अथवा गायका मूत्र और गूगल मिलाके दूध सहित एरंडके तेलको पीवै तो मूत्ररोग और भयंकर वातवृद्धिको शीघ्र नाशता है ॥ १६२ ॥ कोमल वस्त्रसे कपूरकी बत्ती बनाके लिंगके छेदमें धरे उस करके महा घोर रूप मूत्रबंध रोगसे मनुष्य शीघ्र छूटता है ॥ १६३ ॥ पीपल, मिरच, मिश्री, शहद, छोटी इलायची, सेंधानमक इन्हों करके किया लेह बालकोंके मूत्रग्रह रोगमें हित करता है ॥ १६४ ॥

वनकार्पासिकामूलं तंडुलैः सह योजितम् ॥ पक्त्वा तु पोलिकां खादेदपचीनाशकारिणीम् ॥ १६५ ॥ शिरीषनक्तमालानां बीजैरंजितलोचनः ॥ चित्तोन्मादं निहंत्याशु सापस्मारापतंत्रिकम् ॥१६६॥ वासायाः स्वरसः पीतः सितामधुसमन्वितः ॥ चूर्णैश्च वटरोहाणां रक्तपित्तं विनाशयेत् ॥ १६७ ॥

अर्थ—वनकपासकी जडको चावलोंके संग पीस उसकी रोटी बनाय और पकाय बालक खावे तो अपची रोग दूर होता है ॥ १६५ ॥ शिरसके बीज, करंजुआके बीज इन्होंको महीन पीस, बालककी आंखोंमें आंजे तो बालकका चित्त बिगडना, उन्माद, मृगी रोग, अपतंत्र रोग इन्होंको शीघ्र नाशता है ॥ १६६ ॥ वासाके रसमें मिश्री और

शहद मिलाय पीवे अथवा बडके कोपलोंके कल्कमें मिश्री और शहद मिलाय खावे तो रक्तपित्तका नाश होता है ॥ १६७ ॥

पलाशपुष्पक्काथेन वासायाः स्वरसेन वा ॥ चतुर्गुणेन संसिद्धं रक्तपित्तहरं घृतम् ॥१६८॥ रसो दाडिमपुष्पाणां दूर्वायाः स्वरसेन वा ॥ नस्येन नाशयेत्तूर्णं नासिकारक्तमुद्धतम् ॥ १६९ ॥ त्रिकटुकमजमोदा सैंधवं जीरके द्वे समचरणघृतानामष्टमो हिंगुभागः ॥ प्रथमकवलभुक्तं सर्पिषा चूर्णमेतज्जनयति जठराग्निं वातगुल्मं निहांति ॥ १७० ॥

अर्थ-टेसूके फूलोंका क्वाथ अथवा वासाका स्वरस चार भाग ले उसमें एक भाग घृतको सिद्ध करे यह घृत बालकोंके रक्तपित्तको हरता है ॥१६८॥ अनारके फूलोंका रस अथवा दूबके स्वरसका नस्य लेनेसे नाकसे बहुत बहता हुआ रक्त शीघ्र शांत होता है ॥ १६९ ॥ सोंठ, मिरच, पीपल, अजमोद, सेंधानमक, स्याहजीरा, सुफेदजीरा, ये सात भाग और हींग आठवां भाग इन्होंका चूर्ण बनाय घृतसे मिलाय भोजनके आदिमें प्रथम कवलमें इसको लेवे, यह पेटकी अग्निको उपजाता है और वातगुल्मको नाशता है ॥ १७० ॥

पुनर्नवैरंडनवातसीभिः कार्पासजैरस्थिभिरारनालैः ॥ स्विन्नैरमीभीरिति सद्भिरेव स्वेदः समीरार्त्तिहरो नराणाम् ॥ १७१ ॥ कूष्मांडकरसं कृत्वा मधुकं परिपेषयेत् ॥ अपस्मारविनाशाय तत्पिबेत्सप्तवासरान्॥ १७२॥ गोसर्पिःसाधितं पूतं दधिक्षीरशकृद्रसैः॥ चातुर्थिकज्वरोन्मादं सर्वापस्मारनाशनम् ॥ १७३ ॥

अर्थ-सांठी, एरंडकी जड, नवीन अलसी, कपासका बिनोला इन्होंको कांजीसे पीस और गरम कर बालकोंके प्रास किया पसीना वात रोगको हरता है ॥ १७१ ॥ कोहलाके रसमें मुलहठीको पीस सात दिन पीवे तो बालकका मृगीरोग दूर होता है ॥१७२॥ गायका दही, दूध, गोबरका रस इन्हों करके गायके घृतको सिद्ध करे यह घृत बालकोंके चौथिया ज्वर उन्माद और सब प्रकारके मृगी रोग इन्होंको नाशता है ॥ १७३ ॥

हिंगुमाक्षिकसिंधूत्थैः कृत्वा वर्तिं सवर्तिताम् ॥ घृताभ्यक्तां गुदे दद्यादुदावर्तविनाशिनीम् ॥ १७४ ॥ शुंठीकणापुष्करकेतकीनां विधाय चूर्णं ककुभत्वचो वा ॥ रास्नान्वितं वा मधुनावलीढं हृद्रोगमेतच्छमयत्युदग्रम् ॥१७५॥ कोलास्थिपद्मकोशीरचंदनं नागकेशरम् ॥ लीढं क्षौद्रेण बालानां मूर्च्छानाशनमुत्तमम् ॥ १७६ ॥

अर्थ-हींग, शहद, सेंधानमक इन्होंकी अच्छी वत्ती बनाय घृतसे चुपड बालककी गुदामें देवे तो उदावर्त रोगको नाशती है ॥१७४॥ सोंठ, पीपल, पोहकरमूल, केतकी, कोहवृक्षकी छाछ, रायसन इन्होंका चूर्ण शहदमें मिलाय चटावे तो बालकोंका भयंकर हृद्रोग शांत होता है ॥१७५॥ बेरकी गुठली, पद्माख, खस, चंदन, नागकेशर इन्होंके चूर्णको शहदमें मिलाय चटावे तो बालकोंकी मूर्च्छा नष्ट होती है ॥ १७६ ॥

द्राक्षामामलकं स्विन्नं पिष्ट्वा क्षौद्रेण संयुतम् ॥ सर्वदोषभवां मूर्च्छां सज्वरां नाशयेद्ध्रुवम् ॥ १७७॥ शीताः प्रदेहा मणयः सहाराः सेकावगाहा व्यजनस्य वाताः ॥ लेह्यान्नपानादि सुगंधशीतं मूर्छासु सर्वासु परं

प्रशस्तम् ॥ १७८ ॥ जीरकद्वयमम्लीकावृक्षाम्लं दाडिमान्वितम् ॥ शैलार्द्रकं रसं शीघ्रं तिमिरं हंति दुस्तरम् ॥ १७९ ॥

अर्थ-दाख और आंवलोंको सिजाय शहदके संग पीस बालकोंको देवे तो ज्वरसहित और सब दोषोंसे उपजी ऐसी मूर्च्छाको शीघ्र नाशता है ॥ १७७ ॥ शीतल लेप, रत्नोंकी मालाको धारण करना, सेक, स्नान, बीजनाकी पवन, सुन्दर अवलेह, सुगन्ध, शीतल, अन्न-पान आदि ये सब प्रकारकी मूर्च्छाओंमें बहुत उत्तम है ॥ १७८ ॥ सुफेद जीरा, स्याहजीरा, अमली, आमसोल, अनार, लेहसुआ, अदरख इन्होंका रस भयंकर तिमिर अर्थात् अँधेरीको दूर करता है ॥ १७९ ॥

पद्मकं चंदनं तोयमुशीरं श्लक्ष्णचूर्णितम् ॥ क्षीरेण पीतं बालानां दाहं शमयति ध्रुवम् ॥ १८० ॥ कर्पूरचन्दनोशीरलिप्तांगं कट्फलैरपि ॥ पल्लवप्रस्तरे धीमान्स्थापयेद्दाहपीडितम् ॥ १८१ ॥ परिसेकाव-गाहेषु व्यजनानां च सेवने ॥ शस्यते शिशिरं तोयं तृष्णादाहोपशांतये ॥ १८२ ॥

अर्थ-पदमाख, चन्दन, नेत्रवाला, खस इन्होंके महीन चूर्णको दूधके संग बालकोंको पिलावे तो दाह शीघ्र शांत होता है ॥१८०॥ दाहसे पीडित हुए बालकको कपूर, चंदन, खस, कायफल, इन्होंका लेप कर कोमल पत्तोंके बिस्तरे पर बुद्धिमान् वैद्य स्थापित करावे ॥ १८१ ॥ परिसेक, स्नान, बीजनाकी पवन इन्होंके सेवनमें तृषा और दाहकी शांतिके अर्थ शीतल पानी श्रेष्ठ है ॥ १८२ ॥

मुस्ता विडंगं मगधाखुपर्णी कंपिल्लको दाडिमबेल्व-केन ॥ कृमीन्हरेत्सत्वरमुग्रवेगाद्रोगेषु लीढं शमयत्य-

वश्यम् ॥ १८३ ॥ यवचूर्णं कृमिरिपुं मगधा मधुना सह ॥ भक्षयेत्पांडुरोगघ्नं पक्तिशूलहरं परम् ॥ १८४॥ मागधी मगधामूलं नागरं मरिचान्वितम् ॥ क्षौद्रेण लीढं कफजं स्वरभेदं व्यपोहति ॥ १८५ ॥

अर्थ–नागरमोथा, वायविडंग, पीपल, मूषाकर्णी, कपिला, अनारकी छाल, इन्होंके चूर्णको खावे तो भयंकर वेगवाले कृमियोंको शीघ्र हरताहै ॥ १८३ ॥ जवाखार, वायविडंग, पीपल इन्होंके चूर्णको शहदके संग खावे तो पांडुरोग और पक्तिशूलको नाशता है ॥१८४॥ पीपल, पीपलामूल, सोंठ, मिरच इन्होंको शहदमें मिलाय चटावे तो बालकोंका कफसे उपजा स्वरभेद दूर होता है ॥ १८५ ॥

यष्ट्याह्वजीवनीमूर्वाकोलीवटसुसाधितम् ॥ पेयं पित्तोद्भवं हंति स्वरभेदं सुदारुणम् ॥१८६॥ अयोरजैस्त्रैफलचूर्णयुक्तैर्गोमूत्रसिद्धैर्मधुनावलीढैः ॥ पांडुं सकासं च सतक्रपथ्यं शूलं समूलं शमयेदवश्यम् ॥१८७॥ शिलाजतुव्योम-विडंग-लोहताप्याभयाभिर्विहितोऽवलेहः ॥ सर्पिर्मधुभ्यां विधिना प्रयुक्तः क्षयं विधत्ते सहसा क्षयस्य ॥ १८८ ॥

अर्थ–मुलहठी, जीवंती, मरोडफली, बेर, बडके कोंपल इन्होंका क्वाथ पिया जावे तो पित्तसे उपजे हुए भयंकर स्वरभेदको नाशता है ॥१८६॥ लोहेका भस्म, हरड, बहेडा, आंवला, इन्होंको गोमूत्रकी भावना दे पीछे शहदमें मिलादेवे यह पांडु खांसी और जडसहित शूल इन्होंको अवश्य नाशता है, इस पर तक्र और चावलोंका पथ्य देना ॥ १८७ ॥ शिलाजीत अभ्रक, वायविडंग, लोह, सोनामक्खी, छोटी हरड इन्होंका चूर्ण बनाय शहद और घृतमें मिलाय चटावे तो बालकाका क्षयरोग नष्ट होता है ॥ १८८ ॥

नवनीतसिताक्षौद्रं लीढ्वा क्षीरभुजः परम् ॥ करोति पुष्टिं कायस्य क्षतक्षयमपोहति ॥ १८९ ॥ वासामहौषधाव्याघ्रीगुडूचीभिः शृतं जलम् ॥ प्रपीतं शमयत्युग्रं श्वासकासमपोहति ॥ १९० ॥ गर्दभीदुग्धपानेन तुलसीपत्रभक्षणात् ॥ शीतलातोयपानेनाभिषेकश्च प्रशस्यते ॥ १९१ ॥

अर्थ-नौनीघृत, मिश्री, शहद इन्होंको चाटे और दूधको पीवे तो बालकका शरीर पुष्ट होता है और क्षतक्षयरोगका नाश होता है॥१८९ ॥ वासा, सोंठ, कटेली, गिलोय इन्होंका क्वाथ पिलाया जावे तो बालकोंके भयंकर रूप श्वास और खांसीको दूर करता है ॥ १९० ॥ गधीके दूधको पीनेसे और तुलसीके पत्तोंको खानेसे और शीतल संबंधी जलको पीनेसे और शीतलाके स्तोत्रको पढके अभिषेक करानेसे बालकोंका विस्फोटकरोग शांत होता है ॥ १९१ ॥

भस्मना केचिदिच्छंति केचिद्गोमयरेणुना ॥ कृमिपातभयाच्चापि धूपयेत्सुरसादिभिः १९२ ॥ चंदनं वासकं मुस्तां गुडूचीं द्राक्षया सह ॥ एतच्छीतकषायस्तु शीतलाज्वरनाशनः ॥ १९३ ॥ ससैंधवं लोध्रमध्वाज्यघुष्टं सौवीरपिष्टं सितवस्त्रबद्धम् ॥ आश्च्योतनं तन्नयनस्य कुर्यात्कंडूं च दाहं च रुजं च हन्यात् ॥ १९४ ॥

अर्थ--कितनेक वैद्य बालकके विस्फोटकरोग अर्थात् माता निकलनेकी फुन्सियोंमें कीडे पडनेके भयसे राख करके अथवा आरनेकंडोंका चूर्ण करके बालकके नीचे बिछोना करदेते हैं और सभालू आदि तथा वनतुलसीकी धूप देते हैं ॥१९२॥ चंदन, वासा, नागरमोथा, गिलोय,

दाख इन्होंका शीतल क्काथ बनाय बालकको पिलावे तो शीतलाका ज्वर नष्ट होताहै ॥ १९३॥ सेंधानमक, लोध इन्होंको शहद और घृतमें पीस और पिसेहुये सुरमेमें मिलाय तथा सुपेद वस्त्रमें बांध पोटली बनावे पीछे बालकके नेत्रोंपर वारंवार फेरे तो खाज दाह और आंखके रोगको नाशती है ॥ १९४ ॥

चंदनं मरुकं लोध्रं जातीपुष्पाणि गैरिकम् ॥ प्रलेपो दाहरोगघ्नस्तोयाभिष्यंदनाशनः ॥१९५ ॥ शंखस्यभागाश्चत्वारस्तदर्द्धेनच पिप्पली ॥ वारिणा तिमिरं हन्ति अर्बुदं हन्ति मस्तुना ॥ १९६ ॥ चिपिटंमधुनाहन्तिस्त्रीक्षीरेण तदुन्नतम् ॥ १९७ ॥ व्योषं च शृंगं च मनःशिलां च करंजबीजं च सुपिष्टमेतत् ॥ कंड्वर्दितानामथ वर्त्मनां तु श्रेष्ठं शिशूनां नयने विदध्यात् ॥ १९८ ॥

अर्थ–चंदन, मुलहठी, लोध, चमेलीके फूल, गेरू इन्होंका लेप बालकके नेत्रमें करे तो दाहरोग, आंखोंसे पानी झिरना और अभिष्यंदरोग इन्होंको नाशता है ॥१९५॥ चार भाग शंख, दो भाग पीपल इन्होंको पानीसे पीस बालककी आंखमें आंजे तो तिमिररोग नष्ट होताहै और दहीके पानीसे पीस आंजे तो अर्बुदरोग अर्थात् आंखकी गांठ नष्ट होती है॥१९६॥और शहदसे पीस आंजे तो चिपिटरोगका नाश होता है और नारीके दूधसे पीस आंजे तो नेत्रका उन्नतरोग नष्ट होता है ॥ १९७ ॥ सोंठ, मिरच, पीपल, सांबरका सींग, मनशिल, करंजुआके बीज इन्होंको अच्छी तरह पीस बालकों की आंखेंमें आंजे तो आंखोंकी खाज और आंखोंके डोलोंका रोग दूर होता है ॥ १९८ ॥

कपिला मातुलुंगाथ शृंगवेररसः शुभः ॥ सुखोष्णः पूरयेत्कोष्णः कर्णशूलोपशांतये॥१९९॥अर्कस्य पत्रं

परिणामपीतं तैलेन लिप्तं सशिखाग्नितप्तम्॥ आपीड्य तोये श्रवणे निषिक्तं विनिर्हरेद्धै बहुवेदनां च ॥२००॥

अर्थ–कपिला औषधि, बिजोरेकी केसर, अदरख इन्होंका रस निकाल गरम कर सुहाता २ बालकके कानमें पूरित करे तो कानका शूल शांत होता है ॥ १९९ ॥ स्वभावहीसे पीले हुये आकके पत्तेको तेलसे लीप अग्निकी झालसे गरम कर उसको कूट रस निचोड बालकके कानमें डाले तो कानकी बहुतसी पीडा दूर होती है ॥ २०० ॥

घृष्टं रसांजनं नार्याः क्षीरेण क्षौद्रसंयुतम् ॥ प्रशस्यते शिरोरोगे स्रावे वा पूतिकर्णिके ॥ २०१ ॥

अर्थ--नारीके दूधमें रसोतको घिस शहदसे मिला बालकके कानोंमें पूरे तो शिरका रोग कर्णस्राव और पूतिकर्ण अर्थात् कानमें राध आदिके झिरनेसे दुर्गंध होना इन रोगोंमें सुख उपजता है ॥ २०१ ॥

वस्वब्धिनवभूम्यब्दे मासि चैत्रे तथाऽसिते ॥
एतत्कुमारतन्त्रस्य भाषाटीका समाप्तिगा ॥ १ ॥

अर्थ–वसु अर्थात् ८ अब्धि अर्थात् ४ नव अर्थात् ९ भूमि अर्थात् १ ऐसे १९४८ संवत्में चैत्र महीनेमें और कृष्ण पक्षमें इस रावणकृत कुमारतंत्रनामक ग्रंथकी भाषाटीका समाप्त हुई ॥ १ ॥

इति श्रीरोहतकप्रदेशान्तर्गतबेरीग्रामनिवासिगौडवंशावतंसबुध-
शिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितरावणकृत-
कुमारतन्त्रार्थप्रकाशिकाभाषाटीका समाप्ता ।

आयुर्वेद सम्बन्धी हमारे कुछ विशिष्ट प्रकाशन

अमृतसागर–(हिन्दी में) इसमे सर्व रोगों के वर्णन और यत्न हैं। इसके द्वारा विना गुरु वैद्य हो सकते हैं।

अनुपान दर्पण–हिन्दीटीका सहित । इसमें रस धातु बनाने की क्रिया और रोगानुसार औषधियों के अनुपान वर्णित हैं।

आयुर्वेद सूत्र–हिन्दीटीका सहित ।

इलाजुल गुर्बा–(हिन्दी अनुवाद)

कामरत्न–योगेश्वर नित्यानाथ प्रणीत और पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र कृत हिन्दी टीका सहित। इसमें कामशास्त्रादि विषय और रोगों की औषध तथा वाजीकरण औषध अनुभूत है। और वशीकरण प्रयोग भी है।

चक्रदत्त–(चिकित्सासार संग्रह) दत्तकुलोत्पन्न चरक चतुरानन श्रीमच्चक्र पाणि विरचित। श्री० प० जगन्नाथ शर्मा वाजपेयी आयुर्वेदाचार्य द्वारा नितान्त परिशोधित सुबोधिनी टीका सहित

पारद संहिता–हिन्दी टीका सहित। इस ग्रंथ में रसविषयक सभी अवयवों का सांगोपांग वर्णन है तथा अरवी, फारसी, यूनानी, तिब्बी आदि अनेक वैद्यक ग्रंथों का सारांश लेकर विषय प्रतिपादन किया है। अत: पारद (पारे) को सिद्ध करनेवालों के लिए अतीव उपयोगी है।

कोकसार वैद्यक–नारायणप्रसाद मिश्रकृत तथा इच्छागिरिजीकृत काम कलासार सहित। वात्स्यायन कामसूत्र आदि ग्रन्थों में प्रतिपादित विषयों को सरलता से समझने के लिये उक्त ग्रन्थ दो भागों में बनाया गया है। पूर्व भाग में स्त्री पुरुषों के अनेक रोगों के निवारणार्थ उत्तम साधन बताये गये हैं, ईक्षागिरीजी ने कामशास्त्र तथा वैद्यक के अनुभव से कोकशास्त्रों में भी नही पाये जाने वाले साधनों का विशद रूप से संग्रह किया है।

गुणों की पिटारी–काशी निवासी स्वामी परमानन्द कृत–

चर्या चन्द्रोदय–हिन्दी टीका सहित

चरक संहिता–(महर्षिप्रवर चरक–ऋषि प्रणीत) मूलमात्र संस्कृत में सजिल्द

ज्वर तिमिर नाशक–क्या खूब चौवे रामप्रसादजीकृत हिन्दी टीका

डाक्टरी चिकित्सासार–पं० मुरलीधर शर्मा राजवैद्य संग्रहीत

त्रिंशती-(वैद्यवल्लभ) श्री शार्ङ्गधर रचित। संस्कृत टीका व हिन्दी टीका सहित

नपुंसकामृतार्णव–वैद्यरत्न पं० रामप्रसादजी राजवैद्यकृत हिन्दी टीका सहित। इसमें नपुंसकोपयोगी नाना प्रकार के तेल, लेप, घृत आदि वाजीकरण और औषधियां सर्वोत्तम हैं।

पशु चिकित्सा–(वृष कल्पद्रुम) छन्दवद्ध भाषा

पाकप्रदीप और पुष्टि प्रकाश–हिन्दी टीका सहित

वालतंत्र–हिन्दी टीका सहित

वृहन्निघण्टु रत्नाकर–पञ्चम भाग–रोगों का कर्म विपाक

वृहन्निघण्टु रत्नाकर–षष्ठ भाग–रोगों का चिकित्सा विभाग

वोपदेव शतक–हिन्दी टीका सहित

भैषज्य रत्नावली–हिन्दी टीका सहित। मूल रचयिता श्री गोविन्ददासजीसेन - हिन्दीटीकाकार–स्वं० वैद्य शंकरलालजी। इसमें क्वाथ, चूर्ण, अवलेह, आसव, अरिष्ट आदि वनस्पतिजन्य प्रयोग और रस, धातु आदि के द्वारा सिद्ध किये रसायन आदि के अनेक प्रयोग हैं।

मदनपाल निघण्टु–वैद्यरत्न पं० रामप्रसादजी राजवैद्य कृत हिन्दी टीकासहित। औषधियों के नाम व गुणदोष वर्णित हैं।

वैद्यक रसराज महोदधि (प्रथम भाग)–भगत भगवानदास कृत। यूनानी हिकमत, यूनानी दवा, जडी बूटी और संतो की पुस्तकों का संग्रह।

वैद्यक रसराज महोदधि–द्वितीय भाग (उपरोक्त विषयानुसार शरबत पाक आदि की विधि सहित।

वैद्यक रसराज महोदधि–(तृतीय भाग) जड़ी बूटी द्वारा धातु आदि का शोधन, मारण, गुण तथा अनुपान

वैद्यक रसराज महोदधि (चतुर्थ भाग) इसमें सर्व रोगों के निदान, लक्षण, चिकित्सा और पथ्यापथ्य है।

वैद्यक रसराज महोदधि–(पञ्चम भाग) इसमें प्राचीन ग्रन्थों के अच्छे अच्छे नुस्खे व औषधियों का विचार है।

वैद्यक रसराज महोदधि–चारों भाग की एक जिल्द

शरीर पुष्टि विधान भाषा

शिशुपालन–(बालकों के पालन पोषण की विधि सचित्र और नक्शोंसहित) कविराज बलवन्त सिंह मोहर वैद्य वाचस्पति कृत

शीतला परिहार अर्थात् आरोग्यमृतबिन्दु–हिन्दी में

शुभ सन्तति योग प्रकाश–हिन्दी टीका सहित। वैद्यराज पं० राम प्रसाद राजवैद्यकृत

हितोपदेश वैद्यक–हिन्दी टीका सहित। जैनाचार्य श्रीकण्ठजी कृत। इसमें ज्वरादि रोगों के विलक्षण लक्षण तथा सविस्तार चिकित्सा लिखी है।

होम्योपैथी–(हिन्दी में)–लेखक डा० मुकेश बत्रा

हिन्दी मटेरिया मेडिका–द्वितीय भाग

अपवित्र मोरस चीनी–स्वामी भास्करानन्द प्रणीत

चरक संहिता–वैद्यरत्न पं० राप्रसाद राजवैद्यकृत हिन्दीटीका एवं विद्यालंकार आयुर्वेदाचार्य पं० शिवशर्माजी द्वारा संशोधित। चरक के आठों स्थान एक से एक अपूर्व होने पर भी 'चिकित्सास्थान' तो अद्वितीय ही है। प्रथम भाग पृष्ठसंख्या ९१६ तथा द्वितीय भाग पृष्ठसंख्या ११३६ है। सुनहरे अक्षरों से मुद्रित सुंदर प्लास्टिक कवर से मंडित संपूर्ण दो जिल्दों में है।

भावप्रकाश–तीनो खण्ड भावमिश्र संग्रहीत। हिन्दीटीकासहित। हिन्दीटीकाकार गो० बा० लालाशालिग्रामजी। संशोधक–डा० कान्तिनारायणजी मिश्र आयुर्वेद विशारद। ए० एल० आई० एम० (मद्रास) डाइरेक्टर ऑफ आयुर्वेद (पंजाब)। इसमें शारीरिक निदान, नाड़ीज्ञान, रस प्रकरण और अष्टांग चिकित्सा आदि वैभव संबधी सभी विषय वर्णित हैं।

माधवनिदान–पं० दत्तरामजी चौबेकृत हिन्दीटीकासहित। इसमें संपूर्ण रोगो का कारण, उत्पत्ति, लक्षण, संप्राप्ति इत्यादि का वर्णन है।

योगचिन्तामणि–पं० दत्तराम चौबेकृत हिन्दीटीकासहित

सुश्रुत संहिता–हिन्दी टीका चार भागों में संपूर्ण

अष्टाङ्गहृदय–(वाग्भट) हिन्दीटीकासहित, इस वाग्भट कृत मूल की 'शिवदीपिका' नामक हिन्दी टीका पटियाला राज्य के प्रधान चिकित्सक वैद्यरत्न पं० रामप्रसादजी राजवैद्य के सुपुत्र पं० शिवशर्मा आयुर्वेदाचार्य ने ऐसी सरल बनाई है कि जो सर्वसाधारण के परमोपयोगी है।

हमारे यहाँ से विविध विषयों के लगभग तीन हजार प्रकाशन निकलते हैं। विस्तृत जानकारी के लिये बृहत्सूची पत्र मुफ्त मँगा देखिये।

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-६८७१०२५,
फैक्स -०२०-६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

